हरिभूमि
रोहतक भूमि
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

तापमान
अधिकतम 44 .6 डिग्री
न्यूनतम 22 .4डिग्री

एक माह के अंदर ही पीजीआईएमएस में तीसरा अंगदान

16 वर्षीय ब्रेन डेड किशोर 8 जिंदगियों को करेगा रोशन

- *आज फिर बनेगा ग्रीन कॉरिडार हादसे में घायल होने पर लाया गया था पीजीआईएमएस*
- *आ सकती है एयर एम्बुलेंस कुलपति डॉ. एच. के अग्रवाल की मेहनत फिर लाई रंग*
- *किडनी, लिवर, पैंक्रियाज, लंग्स, कॉर्निया और हार्ट जैसे अंग ट्रांसप्लांट होंगे*

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय में रविवार को 16 वर्षीय ब्रेन डेड किशोर का अंगदान किया जाएगा। जिसे हाल ही में हादसे में गंभीर अवस्था में चोटिल होने पर लाया गया था। हेल्थ विवि के कुलपति डॉ. एच. के अग्रवाल और उनकी टीम के प्रयासों से किशोर के परिजनों ने अंगदान के लिए सहमति दे दी है। सुबह 6 बजे से अंग निकालने की प्रक्रिया शुरू होगी। सम्भावना है कि दूर दराज के अस्पतालों की तरफ से अंग की डिमांड हुई तो एयर एम्बुलेंस भी आ सकती है। हालांकि सुबह पुलिस की मदद से ग्रीन कॉरिडार तैयार किए जाएंगे। इस प्रयास से आठ लोगों की जिंदगी रोशन हो सकेंगी। जानकारी के अनुसार, विगत दिनों सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल 16 वर्षीय किशोर को पीजीआईएमएस के ट्रॉमा सेंटर में लाया गया था। डॉ तरुण ओर उनकी टीम के तमाम प्रयासों के बावजूद 24 अप्रैल को चिकित्सकों ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया।

परिवार का ढांढस बढ़ाते कुलपति अग्रवाल।

सोटो करेगा अंग अलॉट

डॉ. एचके अग्रवाल ने बताया कि 26 अप्रैल को सुबह 6 बजे से जिस अस्पताल को जो अंग सोटो अलॉट करेगा। वहां के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम अंग निकालने की प्रक्रिया शुरू करेगी। इसमें किडनी, लिवर, पैंक्रियाज, लंग्स,कॉर्निया और हार्ट जैसे महत्वपूर्ण अंग निकाले जाएंगे। इसके बाद नियमानुसार पोस्टमार्टम किया जाएगा।

24 अप्रैल को ब्रेन डेड घोषित : डॉ तरुण और उनकी टीम के तमाम प्रयासों के बावजूद 24 अप्रैल को चिकित्सकों ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया।
ये डॉक्टर रहे टीम में : ब्रेन स्टेम डेथ कमेटी में डॉ. सुरेखा डाबला, डॉ. तरुण, डॉ. गोपाल व डॉ लव की टीम ने ब्रेन डेड घोषित होने पर चिकित्सा अधीक्षक डॉ. कुंदन मित्तल के कार्यालय को सूचना दी।
पीजीआईएमएस का रिकॉर्ड : रोहतक पीजीआईएमएस एक माह में तीसरा सफल अंगदान करवा रहा है। यह प्रदेश में किसी भी सरकारी संस्थान का रिकॉर्ड है।
समाज देगा अंतिम विदाई : 26 अप्रैल को दोपहर 2 बजे जब पार्थिव देह परिवार को सौंपी जाएगी, तो ट्रॉमा सेंटर की ओटी से लेकर शव वाहन तक डॉक्टर, स्टाफ और समाजसेवी संगठन के लोग कतारबद्ध होकर पुष्प वर्षा करेंगे।

पीजीआईएमएस प्रशासन ने सभी नागरिकों से अपील की है कि वे इस पुण्य कार्य के साक्षी बनें और अंगदान के लिए संकल्प लें।

हिरासत में ड्राइवर की मौत का मामला

रंगदारी केस में उठाया, परिजन बोले-पुलिस टॉर्चर से गई जान

- 10 अप्रैल को चाचा अनूप के खिलाफ दर्ज हुआ था केस पुलिस नरेश को ले गई थी

मृतक का शव ले जाते परिजन।

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

रोहतक सीआईए-2 की कस्टडी में टैक्सी ड्राइवर टिटोली के नरेश(51) की मौत ने पूरे जिले में सनसनी फैला दी। बताया जा रहा है कि चाचा अनूप ठेकेदार पर दर्ज रंगदारी के केस में पुलिस शुक्रवार शाम को नरेश को उठाकर ले गई थी। देर रात उसकी मौत हो गई। परिजनों ने पुलिस पर थर्ड डिग्री टॉर्चर के आरोप लगाए हैं। मामले की जांच डीएसपी को सौंप दी गई है। बताया जा रहा है कि नरेश एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखता था और खेतीबाड़ी के साथ-साथ टैक्सी चलाकर परिवार का पालन-पोषण करता था।

मृतक नरेश

10 अप्रैल को नरेश के चाचा अनूप, जो पेशे से ठेकेदार हैं, के खिलाफ रंगदारी मांगने का केस सिविल लाइन थाने में दर्ज कराया था। इसी मामले में सीआईए-2 ने नरेश को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया था। इसी दौरान उसकी मौत हो गई। सीआईए-2 के इंचार्ज सतीश ने कहा कि नरेश की मौत हार्ट अटैक के कारण हुई है। मामले का खुलासा पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट पर ही होगा। शनिवार को दुष्यंत चौटाला की टीम ने पीजीआई पहुंचकर मृतक के परिजनों से मुलाकात की। वहीं, इंडियन नेशनल स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मलिक भी पोस्टमॉर्टम हाउस पहुंचे और परिजनों को न्याय दिलाने की बात कही।

बहू ने रेप केस की धमकी दी तो ससुर ने दी जान

- **गांव सुनारियां में पारिवारिक विवाद बना आत्महत्या की वजह**
- **बहू की धमकी से टूटे किसान ने निगला जहर, सुसाइड नोट में गंभीर आरोप**
- **हाल ही में घर में तोड़फोड़ और कपड़े जलाने जैसी घटनाएं भी हुईं थी**

हरिभूमि न्यूज ⏭ रोहतक

गांव सुनारिया में पारिवारिक विवाद ने एक किसान की जान ले ली। आरोप है कि बहू और उसके मायके पक्ष की ओर से लगातार झूठे केसों की धमकी और मानसिक दबाव के चलते ससुर ने जहरीला पदार्थ निगलकर आत्महत्या कर ली। मरने से पहले उसने एक पेज का सुसाइड नोट छोड़ा, जिसमें बहू, उसके पिता और भाई को अपनी मौत के लिए जिम्मेदार ठहराया है। घटना के बाद इलाके में सनसनी फैल गई। पुलिस ने मृतक के बेटे की शिकायत पर नामजद आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

मृतक प्रीतम

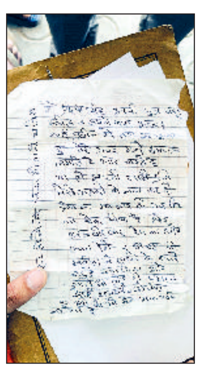

सुसाइड नोट में दर्द और आरोप

जहर निगलने से पहले प्रीतम ने सुसाइड नोट लिखा। इसमें साफ तौर पर बहू, उसके पिता और भाई से परेशान होने का आरोप लगाया है। उसे संपत्ति बहू के नाम करने का दबाव बनाया जा रहा था। यदि उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं, तो उन पर रेप का केस दर्ज कराने की धमकी दी जा रही थी। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि हाल ही में घर में तोड़फोड़ और कपड़े जलाने जैसी घटनाएं भी हुईं, जिससे हालात और बिगड़ गए। नोट में यह भी लिखा गया कि उसने पुलिस में शिकायत दी थी, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। अंत में उसने अपनी मौत के लिए तीनों आरोपियों को जिम्मेदार ठहराया और उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

12 साल पुराना रिश्ता

मृतक की पहचान सुनारिया निवासी प्रीतम के रूप में हुई है, जो किसान था। उसके दो बेटे हैं। बड़े बेटे अमित की शादी करीब 12 साल पहले भटगांव की सविता से हुई थी। समय के साथ दंपति के रिश्तों में खटास बढ़ी और विवाद पूरे परिवार तक पहुंच गया। परिजनों के अनुसार, बहू और उसके मायके पक्ष की ओर से लगातार दबाव बनाया जाता था और छोटी-छोटी बातों पर विवाद थाने व पंचायत तक पहुंचता रहा।

शिकायतों से बढ़ा तनाव

मृतक के बेटे अमित के मुताबिक, उसकी पत्नी अक्सर पुलिस में शिकायतें देकर परिवार को परेशान करती थी। कभी मारपीट तो कभी दहेज उत्पीड़न जैसे आरोप लगाए जाते थे। हर बार पंचायत के हस्तक्षेप से मामला शांत हो जाता, लेकिन कुछ समय बाद फिर से विवाद शुरू हो जाता। अमित ने बताया कि इन झगड़ों से परेशान होकर उसे अपना प्राइवेट स्कूल तक बंद करना पड़ा। पारिवारिक तनाव का असर आर्थिक स्थिति पर भी पड़ा और पूरा परिवार मानसिक दबाव में जी रहा था।

गंभीर आरोप ने तोड़ा हौसला

परिवार के अनुसार, हाल ही में विवाद ने गंभीर रूप ले लिया, जब बहू ने अपने ससुर पर रेप जैसे संगीन आरोप लगाने की बात कही। इस आरोप से प्रीतम गहरे सदमे में आ गए। उन्हें सामाजिक बदनामी का डर सताने लगा और वे लगातार मानसिक रूप से टूटते चले गए। परिजनों का कहना है कि यही आरोप उनके लिए अंतिम झटका साबित हुआ।

खेत में कर ली आत्महत्या

घटना वाले दिन प्रीतम घर से खेत की ओर गया और वहीं जहरीला पदार्थ निगल लिया। जब तक परिजन उसे संभालते, तब तक हालत बिगड़ चुकी थी। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

की जा रही पूछताछ

सूचना मिलते ही शिवाजी कॉलोनी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मृतक के बेटे की शिकायत के आधार पर बहू, उसके पिता और भाई के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि सुसाइड नोट को भी जांच का हिस्सा बनाया गया है और सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए कार्रवाई की जाएगी। संबंधित लोगों से पूछताछ की जा रही है और जल्द ही मामले में आगे की कार्रवाई की जाएगी।

थमी रफ्तार जाम का जंजाल

अवैध पार्किंग और बसों की मनमानी से भी यातायात ठप

गोहाना स्टैंड पर अतिक्रमण से सिकुड़ीं सड़कें, आमजन बेबस

- एंबुलेंस तक जाम में फंस रहीं जिम्मेदारों की चुप्पी कायम
- बाजार, अस्पताल व बसों का दबाव, ट्रैफिक कंट्रोल नदारद
- फुटपाथ गायब, सड़क पर चलने को मजबूर पैदल यात्री
- पीक आवर्स में हालात बेकाबू पुलिस की मौजूदगी नाकाफी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

हरिभूमि सरोकार

गोहाना स्टैंड इन दिनों अव्यवस्था और जाम का पर्याय बन चुका है। शहर के सबसे व्यस्त इलाकों में शामिल इस क्षेत्र में अतिक्रमण, अवैध पार्किंग और बिना योजना के बसों का ठहराव रोजाना लोगों के लिए बड़ी मुसीबत बन रहा है। हालत यह है कि कुछ सौ मीटर की दूरी तय करने में भी लंबा समय लग जाता है। बाजारों की भीड़, अस्पताल की नजदीकी और यातायात प्रबंधन की कमी ने समस्या को और विकराल बना दिया है। सबसे गंभीर बात यह है कि इस जाम में एंबुलेंस तक भी फंस रही हैं, जिससे मरीजों की जान पर खतरा मंडराने लगता है। प्रशासन की छिटपुट कार्रवाई के बावजूद स्थायी समाधान नजर नहीं आ रहा। ऐसे में अब जरूरत है सख्त फैसलों और ठोस योजना की, ताकि शहर की इस धड़कन को जाम के जंजाल से बाहर निकाला जा सके।

सौ मीटर क्रॉस करने में लग रहा एक घंटे तक का समय

स्टैंड नहीं, फिर भी खड़ी रहती हैं बसें

सबसे बड़ी समस्या यह है कि यहां कोई अधिकृत बस स्टैंड नहीं है, लेकिन इसके बावजूद कई गांवों के लिए बसें यहीं खड़ी होती हैं। बस चालकों द्वारा यात्रियों को बैठाने और उतारने के लिए सड़क के बीचों-बीच बसें रोक दी जाती हैं, जिससे यातायात पूरी तरह प्रभावित हो जाता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सुबह और शाम के समय स्थिति और भी भयावह हो जाती है, जब ऑफिस और स्कूल का ट्रैफिक बढ़ जाता है।

एंबुलेंस को भी हो जाती है देरी

सबसे चिंताजनक बात यह है कि सिविल अस्पताल के पास होने के बावजूद एंबुलेंस को भी जाम से गुजरना पड़ता है। कई बार मरीजों को अस्पताल पहुंचाने में देरी हो जाती है, जो उनके लिए खतरनाक साबित हो सकती है। स्थानीय लोगों ने बताया कि कई बार एंबुलेंस के सायरन बजने के बावजूद रास्ता नहीं मिल पाता, क्योंकि सड़क पहले से ही जाम में जकड़ी होती है।

सड़कें बनी 'अस्थायी पार्किंग'

इस क्षेत्र में पार्किंग की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। नतीजन, दुकानदारों और ग्राहकों के वाहन सड़क किनारे ही खड़े कर दिए जाते हैं। कई बार तो दोपहिया और चारपहिया वाहन सड़क के आधे हिस्से को घेर लेते हैं। ट्रैफिक पुलिस की मौजूदगी के बावजूद स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हो पा रहा है। अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई समय-समय पर होती है, लेकिन कुछ दिनों बाद फिर से वही हालात बन जाते हैं।

राहगीरों के लिए भी मुश्किल

जाम की समस्या केवल वाहन चालकों तक सीमित नहीं है। पैदल चलने वाले लोगों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। फुटपाथ पर अतिक्रमण होने के कारण लोग सड़क पर चलने को मजबूर हैं, जिससे हादसों का खतरा भी बढ़ गया है। स्कूल जाने वाले बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं इस अव्यवस्था से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।

ठोस योजना नहीं

लोगों का कहना है कि प्रशासन समय-समय पर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई जरूर करता है, लेकिन यह केवल औपचारिकता बनकर रह गई है। स्थायी समाधान के लिए कोई ठोस योजना नजर नहीं आ रही। लोगों की मांग है कि यहां या तो एक व्यवस्थित बस स्टैंड बनाया जाए या फिर बसों के ठहराव के लिए अलग स्थान निर्धारित किया जाए। साथ ही, पार्किंग की उचित व्यवस्था और ट्रैफिक कंट्रोल के लिए सख्त कदम उठाए जाएं।

बाजारों की भीड़ बढ़ा रही परेशानी

गोहाना स्टैंड के आसपास शहर के प्रमुख बाजार पालिका बाजार, नगारिक अस्पताल, निरंकारी मार्केट हैं। यहां दिनभर खरीदारों और मरीजों की भारी भीड़ रहती है। इन सभी कारणों से क्षेत्र में वाहनों का दबाव कई गुना बढ़ जाता है, लेकिन ट्रैफिक को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं है।

यह हो सकता है समाधान

- बसों के लिए अलग और निर्धारित स्टॉप/मिनी बस स्टैंड बनाया जाए
- सड़क किनारे अतिक्रमण पर सख्त और लगातार कार्रवाई हो
- नो-पार्किंग जोन तय कर सख्ती से पालन कराया जाए
- मल्टी-लेवल या वैकल्पिक पार्किंग की व्यवस्था विकसित की जाए
- ट्रैफिक पुलिस की नियमित तैनाती और सीसीटीवी निगरानी बढ़ाएं
- फुटपाथ खाली कर पैदल यात्रियों के लिए मार्ग सुनिश्चित किया जाए
- पीक आवर्स में ट्रैफिक डायवर्जन प्लान लागू किया जाए

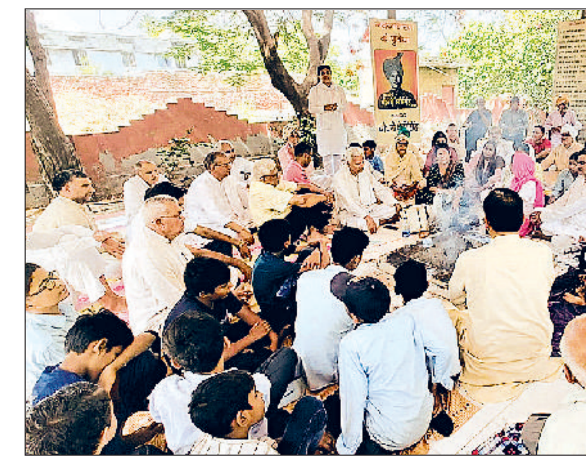

1911 की बरोणा पंचायत को नमन, वंशज किए सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

इतिहास कभी धूल में दबता नहीं, वह समय-समय पर अपनी आहट देता है और ऐसी ही एक गूंज सुनाई दी शनिवार को जाट शिक्षण संस्थान स्थित चौ. देवी सिंह यज्ञशाला में, जहां वर्ष 1911 की बरोणा पंचायत में शामिल पंचायतियों के वंशजों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत हवन यज्ञ से हुई, जिसमें ब्रह्मा की भूमिका सुखबीर दहिया और कृष्ण आर्य ने निभाई, जबकि यजमान के रूप में जगबीर मलिक और स्नेह लता उपस्थित रहे। आयोजन लोकहित संस्था के प्रधान एडवोकेट चंचल नांदल द्वारा कराया गया। इस अवसर पर 1911 की ऐतिहासिक पंचायत से जुड़े परिवारों के वंशजों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इनमें भीम सिंह कादीपुर के वंशज वीरेंद्र राणा और हरपाल राणा, शेर सिंह नांदल के वंशज बिल्लू धनंजय नांदल व राजमल आर्य के वंशज रविंद्र नंदन शामिल रहे। मलिक खाप की ओर से इंडिया रेडियो के पूर्व डायरेक्टर धर्मपाल मलिक और बलजीत कालीरमन को भी सम्मानित किया गया।

8 प्रस्ताव किए थे पारित

एडवोकेट चंचल नांदल ने कहा कि 1911 की बरोणा पंचायत केवल एक बैठक नहीं थी, बल्कि एक दूरदर्शी निर्णयों का संगम थी। इसी पंचायत में जाट शिक्षण संस्था की स्थापना का ऐतिहासिक फैसला लिया गया, जिसे चौ. देवी सिंह और अन्य पूर्वजों ने धरातल पर उतारा। उन्होंने बताया कि उस समय महिला सुरक्षा और सामाजिक सुधार से जुड़े 7 से 8 महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पारित किए गए थे। अब उनकी संस्था का प्रयास है कि उस पंचायत से जुड़े सभी वंशजों को खोजकर सम्मानित किया जाए, ताकि इतिहास की यह लौ जलती रहे।

ये रहे उपस्थित

मौके पर देशवाल खाप के प्रधान करतार सिंह देशवाल, देशवाल भवन के संयोजक नाहर सिंह देशवाल आठगामा तपा बोहर के प्रधान रणवीर नांदल, आठगामा बहु अकबरपुर के उप प्रधान प्रवीण, राष्ट्रीय जाट महासभा भारत की महिला पर प्रधान कविता मलिक जिला प्रधान मुकेश श्योराण जाट सभा से ईश्वर सिंह दलाल सुभाष कादयान आदि मौजूद रहे।

शक्ति केंद्र, बूथ व मंडल की मजबूत संरचना भाजपा की त्रिशक्ति : अशोक खुराना

रोहतक। भाजपा महाराजा अग्रसेन मंडल के प्रभारी अशोक खुराना ने कहा कि शक्ति केंद्र, बूथ और मंडल की मजबूत संरचना भाजपा की त्रिशक्ति है और यही त्रिशक्ति चुनाव में विजय सुनिश्चित करती है। ईमानदारी प्रतिबद्धता और जुझारूपन ही भाजपा कार्यकर्ता की पहचान है और राष्ट्र का नवनिर्माण ही लक्ष्य है। उक्त विचार भाजपा नेता अशोक खुराना ने गांव घड़ावठी में लाखनमाजरा मंडल की बैठक में व्यक्त किये। उन्होंने कहां कि बूथ तथा मंडल के बीच शक्ति केंद्र सेतु का काम करता है। मजबूत शक्ति केंद्र से ही मजबूत बूथ तैयार होंगे और हर बूथ पर संगठन की मजबूती से विजय की नींव तैयार होगी। भाजपा नेता अशोक खुराना ने शक्ति केंद्र प्रमुखों से उनके कार्य क्षेत्र की प्रगति, स्थानीय समस्याओं तथा आगामी योजनाओं पर चर्चा की। उन्होंने कहां कि शक्ति केंद्र प्रमुखों को पार्टी की अपेक्षाओं के अनुसार काम करते हुए प्रत्येक कार्यक्रम व अभियान को प्रत्येक बूथ पर प्रभावी रूप से संपन्न करना कराना चाहिए।

जेईई में दुहन पब्लिक स्कूल का परचम: तन्मय गौड़ ने हासिल किए 95.68 परसेंटाइल अंक

रोहतक। दुहन पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने जेईई परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय और अपने अभिभावकों का नाम रोशन किया है। छात्र तन्मय गौड़ ने सामान्य वर्ग में 95.68 परसेंटाइल हासिल किए। उनकी इस उपलब्धि में कड़ी मेहनत, अनुशासन और निरंतर प्रयास का अहम योगदान रहा। वहीं अनुज लठवाल ने सामान्य-ईडब्ल्यूएस वर्ग में 94.85 परसेंटाइल प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। इसी क्रम में शुभ वशिष्ठ ने सामान्य वर्ग में 91.89 परसेंटाइल हासिल कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। वहीं निकिता ने ओबीसी-एनसीएल वर्ग में 87.15 परसेंटाइल प्राप्त कर सफलता का परचम लहराया। सभी विद्यार्थियों की उपलब्धि उनके समर्पण और लगातार किए गए प्रयासों का परिणाम है। विद्यालय के निदेशक डॉ. अशोक दुहन ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता उनकी प्रतिभा और विद्यालय में दी जा रही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रमाण है।

गेहूं का उठान धीमा होने से तुलाई व भराई कार्य सहज, किसानों को नहीं रही सप्ताह बाद भी राशि

सांपला। अनाज मंडी में गेहूं की उठान प्रकिया धीमी होने के कारण तुलाई व भराई का कार्य भी सहज चल रहा है। वहीं किसानों को एक सप्ताह बाद भी पेमेंट नहीं मिल पा रही है। क्योंकि की जब तक अनाज गोदामों में नहीं पहुंचता तब तक पेमेंट जारी नहीं करने का नियम है।इस लिए किसानों को उनकी फसल के रुपए मिलने में देरी हो रही है। धीमा उठान होने के कारण गेहूं के ढेर लगे हुए हैं। सांपला मंडी में अब तक करीब 6 लाख 10 हजार क्विंटल गेहूं आ चुका है। जिसमें से वेयर हाउस कंपनी ने दो लाख 35 हजार क्विंटल और एक लाख 55 हजार क्विंटल हेफेड एजेंसी द्वारा खरीद किया गया है। जबकि करीब एक लाख 60 हजार क्विंटल गेहूं का उठान हुआ है। किसान नरेंद्र कुमार, सतीश, मनोज कुमार का कहना है कि सरकार 72 घंटे में फसल का भुगतान हो जाएगा एक सप्ताह बीत गया लेकिन उनके खाते में राशि नहीं आई है।

एच डी स्कूल में कुकिंग विदाउट फायर में छात्रों ने दिखाया हुनर

महम। खेड़ी महम स्थित एच.डी. सीनियर सेकेंडरी स्कूल में कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों के लिए /"कुकिंग विदाउट फायर/" प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। स्कूल प्राचार्या शालिनी गुप्ता बताया कि ने इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बिना आग का उपयोग किए विभिन्न स्वादिष्ट और पौष्टिक व्यंजन तैयार किए। जिनमें सैंडविच, फ्रूट चाट, सलाद, स्प्राउट्स डिश और अन्य नवाचारी व्यंजन शामिल रहे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर खरकड़ा में गर्भवती महिलाओं के लिए लगाया शिविर

महम। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर हरियाणा योग आयोग और आयुष विभाग के संयुक्त तत्वाधान में गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य संवर्धन के लिए विशेष योग शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। योगाचार्य अमित अहलावत ने बताया की खरकड़ा गांव में छह दिवसीय योग शिविर शुरू किया गया है। इसका उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखना है तथा उन्हें योग के माध्यम से विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से राहत दिलाना है।

हरिभूमि पहल — मेरा शहर मेरी समस्या — गोहाना अड्डा

नर्क बनी गलियां, भरा रहता है गंदा पानी, बीमारियों का खतरा

सीवर ओवरफ्लो, आमजन बेहाल अनदेखी ने छीना लोगों का चैन

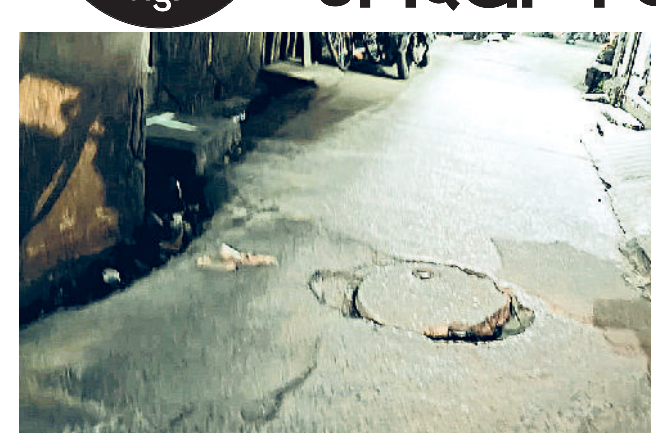

मार्केट आने वाले ग्राहक और स्थानीय निवासी गंदगी के बीच से गुजरने को मजबूर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर का प्रमुख व्यापारिक केंद्र और व्यस्त इलाका 'गोहाना अड्डा' इन दिनों अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहा है। क्षेत्र की गलियों में सीवर का गंदा पानी सड़कों पर जमा होने के कारण न केवल स्थानीय निवासियों का जीना दूभर हो गया है, बल्कि यहां आने वाले ग्राहकों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बार-बार जनस्वास्थ्य विभाग को शिकायत करने के बावजूद स्थिति जस की तस बनी हुई है, जिससे लोगों में भारी रोष है। सड़कों पर जमा यह दूषित पानी केवल यातायात को ही बाधित नहीं कर रहा, बल्कि यह मच्छरों और संक्रामक बीमारियों का गढ़ बनता जा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि जल्द ही समाधान नहीं हुआ, तो क्षेत्र में महामारी फैलने की पूरी आशंका है। गोहाना अड्डा की जनता ने जिला प्रशासन और जनस्वास्थ्य विभाग के उच्चाधिकारियों से मांग की है कि वह स्वयं मौके का मुआयना करें और इस नरकीय स्थिति से उन्हें मुक्ति दिलाएं। लोगों ने कहा कि वह समय पर अपना टेक्स व अन्य बिल अदा करते है उसके बावजूद भी समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। केवल दुकानदार ही नहीं, बल्कि यहां से गुजरने वाले राहगीर भी इस अव्यवस्था के शिकार हो रहे हैं। गलियों में पानी इस कदर भरा है कि बच्चों का स्कूल जाना और बुजुर्गों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है। गंदा पानी अब लोगों के घरों की दहलीज तक पहुंच रहा है। सीवर की लाइनें पूरी तरह चौक हो चुकी हैं, लेकिन सफाई के लिए कोई मशीन या कर्मचारी नहीं आता।

बढ़ता है आर्थिक बोझ

गोहाना अड्डा मार्केट में पिछले कई दिनों से सीवर का गंदा पानी जमा है। इस कारण क्षेत्र में भयंकर दुर्गंध फैली हुई है। हमारी दुकानों के ठीक सामने घुटनों तक गंदा पानी भरा रहता है। ग्राहक दुकान के अंदर आने से कतराते हैं। सारा दिन बदबू में बैठना पड़ता है जिससे बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। -कमल कुमार

घर में बैठना मुश्किल

यह समस्या नई नहीं है, लेकिन अब स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई है। जनस्वास्थ्य विभाग के पोर्टल पर कई बार शिकायतें दर्ज कराई गईं, लेकिन फाइलों में शिकायत का समाधान दिखाकर उन्हें बंद कर दिया जाता है। यदि एक सप्ताह के भीतर सीवर लाइनों की सफाई नहीं की गई और पानी की निकासी सुनिश्चित नहीं हुई, तो हमें मजबूरन सड़क जाम कर प्रदर्शन करना पड़ेगा। कॉलोनीवासी व अन्य राहगीरों को सीवर की सफाई न होने के कारण बदबू का सामना करना पड़ रहा है। -रविंद्र कुमार

मेरा शहर, मेरी समस्या कॉलम के जरिये आप भी रखें अपनी बात। अगर सेक्टर, गली-मोहल्ला, वार्ड, गांव और आसपास हैं समस्याओं से परेशान तो इस नंबर 9253681012 पर करें व्हाट्सएप। हम उठाएंगे आपका मुद्दा।

सर्वसम्मति

सांपला नगर निकाय चुनाव में भाजपा को मिली पहली जीत

वार्ड 3 से महेश बंसल निर्विरोध पार्षद चुने गए, अन्य प्रत्याशियों ने नहीं किया आवेदन

औपचारिक घोषणा के साथ मानी जाएगी जीत, परिणाम आपसी सहमति व सौहार्द का प्रतीक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सांपला

- चुनाव से पहले तय हुआ भाजपा का पार्षद

महेश बंसल

नगरपालिका चुनाव में वार्ड नंबर 3 से पार्षद पद के लिए महेश बंसल निर्विरोध निर्वाचित हो गए हैं। नामांकन प्रक्रिया पूरी होने के बाद इस वार्ड से केवल महेश बंसल ने ही ही नामांकन किया , जबकि किसी अन्य प्रत्याशी ने पर्चा दाखिल नहीं किया। इस प्रकार महेश बंसल इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के पहले निर्विरोध पार्षद बन गए हैं, जिससे भाजपा को चुनाव शुरू होने से पहले ही बड़ी बढ़त मिल गई है। औपचारिक घोषणा के साथ उनकी जीत दर्ज मानी जाएगी। वार्ड में बिना मुकाबले हुई इस जीत को उनकी सामाजिक भाईचारे में मजबूत पकड़ और सभी वर्गों में व्यापक स्वीकार्यता के रूप में देखा जा रहा है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह परिणाम आपसी सहमति, सौहार्द और एकजुटता का प्रतीक है। वार्ड नंबर 3 सांपला का एकमात्र ऐसा वार्ड रहा, जहां सर्वसम्मति से पार्षद चुना गया। सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय महेश बंसल को जनता ने सर्वसम्मति से अपना प्रतिनिधि चुना, जिससे चुनाव से पहले ही भाजपा का एक पार्षद तय हो गया।

सांपला में सियासी संग्राम तेज 65 उम्मीदवारों ने भरी हुंकार

सांपला। नगरपालिका चुनाव ने सांपला की सियासत में पूरी तरह गर्मी भर दी है। नामांकन प्रक्रिया के समापन के साथ ही अब चुनावी तस्वीर लगभग साफ हो चुकी है और हर गली-मोहल्ले में राजनीतिक चर्चाएं जोर पकड़ने लगी हैं। इस बार मुकाबला केवल चुनाव नहीं, बल्कि प्रतिष्ठा और वर्चस्व की जंग बनता नजर आ रहा है। चेयरमैन पद के लिए 15 उम्मीदवारों के मैदान में उतरने से मुकाबला सीधा नहीं बल्कि बहुकोणीय हो गया है। वहीं 16 वार्डों में 50 पार्षद प्रत्याशी चुनावी रण में हैं, जिससे हर वार्ड में समीकरण अलग-अलग रंग दिखा रहे हैं। कई वार्डों में त्रिकोणीय तो कहीं चौकोणीय मुकाबले की स्थिति बन रही है, जो परिणामों को और अधिक अप्रत्याशित बना सकती है। नामांकन के अंतिम दिन भी सियासी हलचल कम नहीं रही। चेयरमैन पद के लिए पांच और पार्षद पद के लिए नौ उम्मीदवारों ने आखिरी समय में पर्चा दाखिल कर मुकाबले को और दिलचस्प बना दिया।

चुनावी खर्च पर कड़ी निगरानी के लिए 8 विशेष टीमें तैनात

सांपला। नपा चुनाव को लेकर प्रशासन ने पारदर्शिता और सख्ती का स्पष्ट संदेश दे दिया है। 10 मई को होने वाले मतदान से पहले ही चुनावी खर्च और गतिविधियों पर नजर रखने के लिए आठ विशेष टीमें मैदान में उतार दी गई हैं। एसडीएम एवं रिटर्निंग अधिकारी अंकिता पंवार के नेतृत्व में यह पूरा निगरानी तंत्र सक्रिय हो चुका है। प्रशासन ने चार वीडियो सर्विलेंस और चार वीडियो व्यूविंग टीमें गठित की है। वीडियो सर्विलेंस टीमों के तहत वार्ड 1 से 4 की जिम्मेदारी डॉ. हरदीप सिंह और वीडियोग्राफर सुनील को दी गई है, जबकि वार्ड 5 से 8 में पवन कुमार व साहिल, वार्ड 9 से 12 में संजीव कुमार व प्रदीप और वार्ड 13 से 16 में नवीन कुमार व सतीश तैनात रहेंगे। इसी प्रकार वीडियो व्यूविंग टीमों में वार्ड 1 से 4 के लिए अनिल कुमार व सुनील, वार्ड 5 से 8 के लिए रवीश कुमार व साहिल, वार्ड 9 से 12 के लिए जितेंद्र कुमार शर्मा व प्रदीप तथा वार्ड 13 से 16 के लिए नवीन पुनिया व सतीश को जिम्मेदारी दी है।

28 तक नामांकन वापसी 10 मई को होगा मतदान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सांपला

- 27 अप्रैल को होगी नामांकन पत्रों की जांच

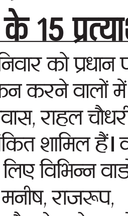

रिटर्निंग अधिकारी एवं उपमंडलाधीश अंकिता पुवार ।

नगरपालिका सांपला के चुनाव को लेकर चुनावी सरगर्मियां अपने चरम पर पहुंच गई हैं। नामांकन पत्र दाखिल करने के अंतिम दिन प्रधान पद के लिए 5 तथा सदस्य पदों के लिए 7 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन प्रस्तुत किए। रिटर्निंग अधिकारी एवं उपमंडलाधीश अंकिता पुवार ने जानकारी देते हुए बताया कि अब उम्मीदवार 28 अप्रैल को सायं 3 बजे तक अपने नामांकन पत्र वापस ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 27 अप्रैल को सुबह 11:30 बजे से नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी। इसके बाद 28 अप्रैल को नाम वापसी की प्रक्रिया पूरी होने पर शेष उम्मीदवारों को चुनाव चिन्ह आवंटित किए जाएंगे और मतदान केंद्रों की सूची भी जारी कर दी जाएगी।

प्रधान पद के 15 प्रत्याशी

अंतिम दिन शनिवार को प्रधान पद के लिए नामांकन करने वालों में रजनी, राम निवास, राहल चौधरी, शीतल और अंकित शामिल हैं। वहीं सदस्य पद के लिए विभिन्न वार्डों से रमेश, संगीता, मनीष, राजरूप, ज्योति, अमित और नेहा ने अपने नामांकन दाखिल किए। कुल मिलाकर प्रधान पद के लिए 15 और 16 वार्डों के सदस्य पदों के लिए 50 प्रत्याशी मैदान में हैं। 10 मई को मतदान कराया जाएगा। 13 मई को सुबह 8 बजे से मतगणना शुरू होगी और परिणाम उसी दिन घोषित कर दिए जाएंगे।

गलत खेत में से निकाल दी ड्रेन, मुआवजे के लिए काट रहे चक्कर

- पांच साल से न्याय के लिए भटक रही भैणी महाराजपुर गांव की विधवा

महम। भैणी महाराजपुर गांव की महिला रानी पिछले पांच साल से सरकारी कार्यालयों के चक्कर काट रही है। महिला का कहना है कि सरकार द्वारा सैमाण गांव से धनाना तक एक ड्रेन निकाली गई है। नक्शे व रिकॉर्ड के मुताबिक यह ड्रेन उसके खेत से नहीं निकलनी थी। वह पड़ोसी के खेत से निकलनी थी। पड़ोसी को ड्रेन का मुआवजा भी मिल चुका है। लेकिन ड्रेन पड़ोसी के खेत की बजाए उसके खेत से निकाल दी गई है। जबकि ड्रेन का मुआवजा वह ले चुका है और उसे ड्रेन का मुआवजा भी नहीं दिया गया। मामला उपमंडल अधिकारी सिवानी और जल सेवाएं मंडल सैमाण धनाना ड्रेन के अधिकारियों के संज्ञान में भी है। लेकिन हहर साल यह आश्वासन दिया जाता है कि मई जून में जमीन की पैमाइश करवाकर उसकी जमीन खाली कर दी जाएगी। लेकिन यह सिलसिला पिछले पांच साल से चल रहा है।

15 करोड़ से प्रथम जलघर का होगा कायाकल्प, स्टोरेज क्षमता 35 करोड़ लीटर होगी

पुराने शहर की प्यास बुझाने को तैयार अब 1932 की विरासत

ऐतिहासिक संरचना को मिलेगी नई जान, 80 कॉलोनियों के लाखों लोगों को जल संकट से मिलेगी स्थायी मुक्ति

अलग खबर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर के विकास और विस्तार के बीच अक्सर पुरानी बुनियादी संरचनाएं दम तोड़ने लगती हैं, लेकिन मानसरोवर पार्क स्थित शहर के पहले और सबसे पुराने जलघर के लिए वक्त का पहिया अब सकारात्मक दिशा में घूमने लगा है। वर्ष 1932 में ब्रिटिश काल के दौरान निर्मित इस जलघर की ऐतिहासिक प्रासंगिकता आज भी उतनी ही बनी हुई है, जितनी नौ दशक पहले थी।

वर्तमान में पुराने शहर की करीब डेढ़ लाख की आबादी जिस पेयजल संकट और पानी की कटौती से जूझ रही है।इसी समस्या के स्थायी समाधान के लिए जन स्वास्थ्य विभाग ने एक प्रपोजल तैयार कर भेजा और उसे मुख्यालय से मंजूरी मिल गई है। लगभग 14.97 करोड़ की लागत से होने वाला यह पुनरुद्धार कार्य केवल मरम्मत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शहर के जल प्रबंधन की तस्वीर बदलने वाला एक बड़ा कदम है। वर्तमान में शहर की कुल 6.50 लाख की आबादी की जिम्मेदारी जन स्वास्थ्य विभाग के चार मुख्य जलघरों पर है, लेकिन मानसरोवर पार्क स्थित इस प्रथम जलघर पर सबसे अधिक दबाव रहता है क्योंकि यह शहर के सबसे घने बसे हुए इलाकों को कवर करता है। फिलहाल इस जलघर की भंडारण क्षमता 21.3 करोड़ लीटर है, जो बढ़ती आबादी की जरूरतों के सामने कम पड़ रही है। इसी के चलते शहरवासियों को अक्सर लो-प्रेशर और पानी की भारी कटौती का सामना करना पड़ता है। विस्तार कार्य पूरा होने के बाद इसकी क्षमता जादुई रूप से बढ़कर 35 करोड़ लीटर हो जाएगी, जो आने वाले कई दशकों तक शहर की प्यास बुझाने में सक्षम होगी।

निर्माण पूरा होने पर कटौती होगी बंद

इस पूरे प्रोजेक्ट का सबसे सुखद पहलू उन लाखों लोगों के चेहरों पर आने वाली मुस्कान है, जिन्हें गर्मियों के मौसम में एक-एक बूंद पानी के लिए संघर्ष करना पड़ता था। विभाग के अधिकारियों का मानना है कि इस क्षमता विस्तार के बाद पानी की सप्लाई में होने वाली अवांछित कटौती पूरी तरह समाप्त हो जाएगी और अंतिम छोर तक बसे हुए घरों में भी भरपूर दबाव के साथ पानी पहुंच सकेगा। 1932 में जब इस जलघर की नींव रखी गई थी, तब शहर की आबादी बेहद कम थी, लेकिन आज यह एक महानगर का रूप ले चुका है। ऐसे में विरासत को संरक्षित करते हुए उसे आधुनिक इंजीनियरिंग से जोड़ना एक सराहनीय कदम है।

भंडारण बढ़ेगा

लगभग 14.97 करोड़ की लागत से यह निर्माण कार्य किया जाएगा। फिलहाल इस जलघर की भंडारण क्षमता 21.3 करोड़ लीटर है, जिसे अब बढ़ाकर 35 करोड़ लीटर किया जाएगा।

-संदीप कुमार, कार्यकारी अभियंता, जनस्वास्थ्य व अभियांत्रिकी विभाग

ढांचे को दो-दो फीट और ऊंचा किया जाएगा

वर्तमान में इस परिसर में तीन विशाल तालाब मौजूद हैं, जिनमें से दो तालाब वर्षों से रखरखाव के अभाव में क्षतिग्रस्त पड़े थे और अपनी वास्तविक क्षमता के अनुरूप पानी संग्रहित नहीं कर पा रहे थे। इन क्षतिग्रस्त तालाबों को आधुनिक तकनीक से न केवल दुरुस्त किया जाएगा, बल्कि उनके बुनियादी ढांचे में सुधार करते हुए उन्हें दो-दो फीट और ऊंचा किया जाएगा। इससे पानी रोकने की क्षमता में भारी इजाफा होगा। इसके साथ ही, भविष्य की जरूरतों और आपातकालीन स्थितियों को ध्यान में रखते हुए परिसर के भीतर एक अतिरिक्त नए टैंक का निर्माण भी किया जाएगा।

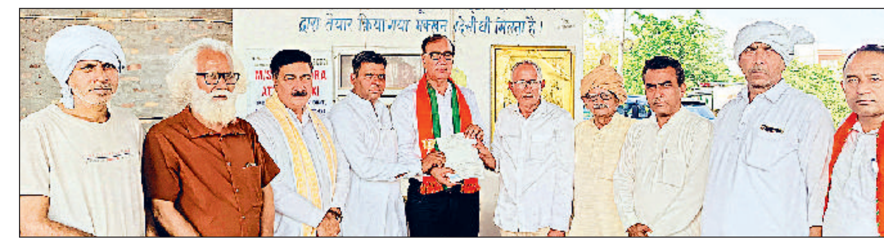

जिला रोहतक की गोशालाओं को दिया चार करोड़ 44 लाख रुपये का अनुदान

- भाजपा जिलाध्यक्ष ढाका बोले सरकार गोमाता के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

प्रदेश सरकार द्वारा गोसंवर्धन एवं संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रोहतक, कलानौर एवं महम क्षेत्र की गोशालाओं के लिए 4 करोड़ 44 लाख 50 हजार का त्रिमासिक अनुदान जारी किया गया है। इस के तहत भाजपा जिला अध्यक्ष एडवोकेट रणवीर सिंह ढाका ने विभिन्न गोशालाओं का दौरा कर संबंधित प्रबंधकों को अनुदान राशि के चेक वितरित किए। रणवीर सिंह ढाका ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार गोमाता के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध व समर्पित है।

ये रहे मौजूद

जिला मीडिया प्रभारी पंकज भारद्वाज ने बताया इस अवसर पर डॉ अशोक रंगा, सुखबीर चंदेलिया, नितिन जैन,मंडल अध्यक्ष नवीन शर्मा, धर्मबीर सैनी,मंडल अध्यक्ष जितेंद्र नांदल, एडवोकेट मनोज,शिव परमार,नरेश गौड़ एवं स्थानीय भाजपा पदाधिकारी एवं गोशाला समिति के सदस्य भी उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय इंटर स्कूल जंप रोप स्पर्धा में 180 खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

रोहतक। हरियाणा जंप रोप संघ के तत्वावधान में आयोजित 18वीं जिला स्तरीय इंटर स्कूल जंप रोप प्रतियोगिता का आयोजन जैन पब्लिक स्कूल, माता दरवाजा, जींद रोड, रोहतक में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। संघ के संस्थापक वीर सिंह आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतियोगिता का शुभारंभ एस डी पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर ऋतिक आर्य, श्रीमद् जगतगुरु शंकराचार्य ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण तथा हरियाणा जंप रोप संघ की प्रधान एवं रोहतक सैनी संस्था के उपाध्यक्ष देवेंद्र सैनी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जैन पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल आशा छाबड़ा ने की। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते हुए उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस प्रतियोगिता में रोहतक जिले के 22 स्कूलों से लगभग 180 खिलाड़ियों (लड़के एवं लड़कियां) ने भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में जैन पब्लिक स्कूल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑल ओवर विजेता का खिताब जीतकर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

योगिता का नेशनल रिकॉर्ड, अमन ने एशियन जूनियर क्वालीफाई किया

रोहतक। प्रदेश के एथलीट खिलाड़ियों ने कर्नाटक के तुमकुर में आयोजित जूनियर फेडरेशन प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन किया है। 5 किमी रेस वॉक स्पर्धा में हिसार की योगिता ने नया जूनियर नेशनल रिकॉर्ड बनाकर रजत पदक जीता, जबकि हैमर थ्रो में हरियाणा के अमन ने एशियन जूनियर चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई कर लिया। एथलेटिक्स हरियाणा के महासचिव प्रदीप मलिक ने बताया कि प्रतियोगिता के दूसरे दिन योगिता ने 23 मिनट 27 सेकेंड 32 माइक्रो सेकेंड का समय लेकर नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। स्वर्ण पदक मध्यप्रदेश की रंजना यादव ने 23 मिनट 22 सेकेंड 12 माइक्रो सेकेंड के समय के साथ जीतते हुए रिकॉर्ड बनाया। इससे पहले यह रिकॉर्ड 2025 में भुवनेश्वर में मनीषा के नाम था।

हरियाली में सीख का अनमोल सफर

रोहतक। जीडी गोयनका इंटरनेशनल स्कूल के नन्हें विद्यार्थियों ने प्रकृति की गोद में सीखने का अनोखा अनुभव प्राप्त किया। नर्सरी से कक्षा 5 तक के बच्चों के लिए एक शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें पौधों से भरी नर्सरी में ले जाया गया। यह भ्रमण बच्चों के लिए कक्षा से बाहर वास्तविक जीवन से जुड़ने का प्रेरणादायक अवसर बना। नर्सरी पहुंचते ही रंग-बिरंगे फूलों और हरे-भरे पौधों ने बच्चों का मन मोह लिया। नर्सरी विशेषज्ञों ने सरल भाषा में पौधों की देखभाल, जल संरक्षण और पर्यावरण संतुलन का महत्व बताया। बच्चों ने उत्सुकता से प्रश्न पूछे और प्रकृति के प्रति अपना प्रेम जताया। विद्यालय प्रबंधन ने इस सफल आयोजन के लिए शिक्षकों के प्रयासों की सराहना की। अनामिका बलहारा के मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम सुरक्षित और यादगार रहा।

पठानिया पब्लिक स्कूल में नन्हे हाथों ने गढ़ी क्ले की दुनिया, बड़ों ने सुलझाई सुडोकू की पहेली

- प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया सहित स्कूल प्रबंधन ने विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

विद्यार्थियों की रचनात्मकता और तार्किक क्षमता को निखारने के उद्देश्य से पठानिया पब्लिक स्कूल में पहली से बारहवीं तक के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान जहां प्राथमिक वर्ग के बच्चों ने कल्पनाशीलता से सुंदर मॉडल बनाए, वहीं वरिष्ठ वर्ग के बच्चों ने गणितीय पहेलियों में कौशल दिखाया। पहली से पांचवीं तक के विद्यार्थियों के लिए 'क्ले मॉडलिंग' प्रतियोगिता हुई। बच्चों ने रंग-बिरंगी क्ले से गणेश जी, शिवलिंग, जगन्नाथ जी सहित प्रकृति, जंगल और जीव-जंतुओं के जीवंत मॉडल बनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। कोमल बुट्टन, कनिका मल्होत्रा और प्रिया सपड़ा ने निर्णायक की भूमिका निभाते हुए बच्चों की कला को सराहा। दूसरी ओर, कक्षा से बारहवीं तक के विद्यार्थियों के लिए 'सुडोकू प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। गणित अध्यापिकाओं प्रभा शर्मा, मीना और अनु के निर्देशन में प्रतियोगिता हुई। स्कूल डायरेक्टर अंशुल पठानिया ने कहा कि इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों की छिपी प्रतिभा को उजागर करना है। स्कूल को-फाउन्डर वर्षा पठानिया और प्रधानाचार्या तन्वी पठानिया सहित प्रबंधन ने विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया।

एमएस सरस्वती में जिला शतरंज चैंपियनशिप का आगाज़

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

माता दरवाजा स्थित एमएस सरस्वती सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को 38वीं रोहतक जिला शतरंज चैंपियनशिप-2026 का शानदार शुभारंभ हुआ। जिला शतरंज एसोसिएशन द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय प्रतियोगिता का उद्देश्य हरियाणा राज्य स्तरीय शतरंज टूर्नामेंट के लिए जिले की सर्वश्रेष्ठ टीम का चयन करना है। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि शकुंतला बेनीवाल (स्पोर्ट्स डायरेक्टर, एमडीयू) और प्रीति बंसल (डायरेक्टर, किया मोटर कंपनी) ने बिसात पर पहली चाल चलकर किया। विद्यालय की प्रिंसिपल रितु और निर्देशक हिमांक मित्तल ने अतिथियों का स्वागत किया। टूर्नामेंट निर्देशक उमेद शर्मा ने बताया कि विभिन्न आयु वर्गों (अंडर-9 से सीनियर ओपन तक) से शीर्ष दो लड़कों और दो लड़कियों का चयन राज्य स्तर के लिए किया जाएगा। प्रतियोगिता के पहले दिन रोहतक के नामी स्कूलों और ग्रामीण क्षेत्रों के 200 से अधिक खिलाड़ियों ने मानसिक एकाग्रता का परिचय दिया। जनरल सेक्रेटरी विनय शर्मा और अन्य खेल प्रभारियों के कुशल संचालन में मुकाबले बेहद रोमांचक रहे। प्रतियोगिता के अंतिम परिणाम और राज्य स्तर के लिए चुने जाने वाले खिलाड़ियों के नामों की घोषणा 26 अप्रैल को होने वाले फाइनल मैचों के बाद की जाएगी।

द आर्यन ग्लोबल में इंटर-हाउस बास्केटबॉल प्रतियोगिता में कारगिल हाउस बना विजेता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

खेल केवल शारीरिक स्फूर्ति ही नहीं, बल्कि टीम भावना और अनुशासन का भी संचार करते हैं। इसी उद्देश्य के साथ करोंथा स्थित द आर्यन ग्लोबल स्कूल में छात्राओं के लिए इंटर-हाउस बास्केटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 9वीं से 12वीं तक की छात्राओं ने भाग लिया फाइनल मैच में छात्राओं की ऊर्जा और कौशल ने दर्शकों को अंत तक बांधे रखा। बेहतरीन रणनीति और टीम वर्क के दम पर कारगिल हाउस ने जीत हासिल की। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने विजेता एवं उपविजेता टीमों को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि खेल व्यक्तित्व विकास का अभिन्न हिस्सा हैं और हार-जीत से ऊपर उठकर खेल भावना को बनाए रखना ही असली जीत है।

स्वामी नित्यानंद स्कूल में टीकाकरण जागरूकता अभियान, छात्रों में उत्साह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के पोर्टल के तहत स्वामी नित्यानंद पब्लिक स्कूल में टीकाकरण जागरूकता एवं प्रतिरक्षण अभियान आयोजित किया गया। सुबह 11:30 बजे शुरू हुए इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के स्वस्थ भविष्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना रहा। अभियान का संचालन डॉ. सुनीता शर्मा, रेखा देवी और पूजा रानी (आशा कार्यकर्ता) सहित स्वास्थ्य टीम ने किया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं में विशेष उत्साह देखा गया। सुमित मलिक ने टीम का आभार जताया, वहीं डॉ. अनु धनखड़ ने ऐसे अभियानों को समाज के लिए जरूरी बताया।

कोटा, चंडीगढ़, दिल्ली के बाद अब रोहतक में भी स्पेशल कोचिंग
IIT-JEE | NEET | NDA
6th to 12th Class & Board
ADMISSION OPEN
Get Direct Scholarship For JEE/NEET Courses Based On 10th CBSE Board 2026 Result
DIRECT SCHOLARSHIP

PERCENTAGE	SCHOLARSHIP
Above 95%	100%
85% - 94%	95%
70% - 84%	80%

1 WEEK FREE TRIAL CLASS BEFORE ADMISSION
Day Boarding Classes for 6th to 12th
KOTA CLASSES
144-L Model Town Near CR Polytechnic College, Rohtak M. 97285-44433

तैयारी | वीसी ने राज्यपाल को दी जानकारी

हेल्थ यूनिवर्सिटी की योजना: शैक्षणिक व स्वास्थ्य सेवाओं को मिलेगा बढ़ावा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एचके अग्रवाल ने कुलाधिपति और हरियाणा के राज्यपाल प्रो. आशिम कुमार घोष से मुलाकात कर विश्वविद्यालय द्वारा शैक्षणिक उत्कृष्टता और स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए किए जा रहे विभिन्न प्रयासों की जानकारी दी। बैठक के दौरान डॉ. अग्रवाल ने अनुसंधान को बढ़ावा देने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और चिकित्सा शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए विश्वविद्यालय के निरंतर प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रमुख घटक संस्थान, पीजीआईएमएस, रोहतक की अहम भूमिका पर जोर दिया, जहां प्रतिदिन लगभग 8,000 मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। ये मरीज न केवल हरियाणा बल्कि आसपास के राज्यों से भी आते हैं। उन्होंने अस्पताल में आधारभूत ढांचे के उन्नयन, चिकित्सा सुविधाओं के आधुनिकीकरण और मरीजों को बेहतर सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी भी साझा की।

रोहतक। हरियाणा के राज्यपाल प्रो. आशिम कुमार घोष से मुलाकात करते पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एचके अग्रवाल। फोटो : हरिभूमि

विकास की जानकारी दी

डॉ. अग्रवाल ने परिसर में चल रही विकास परियोजनाओं के बारे में भी राज्यपाल को अवगत कराया, जिनमें शैक्षणिक भवनों का विस्तार, प्रयोगशाला सुविधाओं में सुधार और शिक्षण व निदान में उन्नत तकनीकों का समावेश शामिल है।

SHIKSHA BHARTI SR. SEC. SCHOOL
(Affiliated to CBSE, Affiliation No. 530606)
GOHANA ROAD, ROHTAK
Email : shikshabhartirtk@rediffmail.com, Website : http://www.shikshabhartirohtak.com
ADMISSION OPEN 2026-27
ALL STREAMS: ARTS I COMMERCE I SCIENCE
Leading School in the Field of Education

Congratulation Our Class 10th Toppers

MILAN 92% | ANKITA 91.6% | MRITUNJAY 91.2% | ISHA 91.2% | RASHI 86.8%

Subject Wise Topper

MILAN	ANKITA	MRITUNJAY	ISHA	ANKIT
English- 93 Math- 93	Hindi - 95	Science-98 Comp. - 94	Science-98	Comp. - 94

SALIENT FEATURES
- Vast playgrounds with all facilities for various games as Football, Drop Roball, Basketball, Volleyball, Baseball & Speedball.
- Overall development of students through Co-curricular Activities
- Achievements at National level in Vedic Mathematics, Sports & Science.
- Highly qualified and dedicated staff.
- Affordable Fee Structure.
- Child centered and value based education.
- Experiential Learning
- Fleet of transportation covering the main trunk & feeder routes.
- 15 Acre Pollution free campus.
- Play Way Method for TINY-TOTS.

Multipurpose Hall For Indoor Games
Badminton, Table Tennis, Carrom, Chess & more...
100% Board Results
NSS UNIT from Haryana
SGFI Achievement : 10 Students selected for SGFI
ROBOTICS CLASSES Atal Tinkering Lab
For More Details, Contact
#9034042751, 9306950996

पारा 44.6 डिग्री पार, अब रातों में भी लू चलने की आशंका

लगातार दूसरे दिन भी तंदूर बना रहा रोहतक

दिन का पारा सामान्य से 5.9 डिग्री ज्यादा

गर्मी का प्रकोप

हीट स्ट्रोक के मरीजों की संख्या बढ़ी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक लगातार दूसरे दिन भी भीषण गर्मी की वजह से तंदूर बना रहा। शनिवार को भी जैसे ही पारा फिर 44.6 डिग्री सेल्सियस पर पहुंचा तो रोहतक देश के सबसे छह गर्म शहरों में शामिल हो गया। दिन का तापमान सामान्य से 5.9 डिग्री सेल्सियस ज्यादा है। बीते 24 घंटे में जहां अधिकतम तापमान में कोई बदलाव नहीं हुआ, वहीं न्यूनतम पारा में 2.2 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी होकर यह 26.4 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। ये सामान्य से 4.7 डिग्री ज्यादा है। अब हालात ये हैं कि पूरी रात लू सकती हैं। अगर रात में लू चलेंगी ये मानकर चलें कि सूर्य सुबह से ही आग बरसाना शुरू करेगा। कुल मिलाकर गर्मी ने रौद्र रूप अब दिखा दिया है। आईएमडी चंडीगढ़ का कहना है कि 26 अप्रैल की रात से पहाड़ों में पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा। जिसका असर हरियाणा पर भी पड़ सकता है। यानी के लू से थोड़ी बहुत राहत मिल सकती है। इस वस्टर्न डिस्ट्रबेंस का असर 29 अप्रैल तक जारी रहने की उम्मीद है। अत्याधिक गर्मी होने की वजह से पीजीआईएमएम से हीट स्ट्रोक के मरीजों की संख्या भी बढ़ रही है। मेडिसन विभाग में शनिवार को मरीजों की संख्या 350-400 के बीच रही।

अप्रैल में ही दिखाए तेवर

अप्रैल के अंतिम दिनों में ही गर्मी ने अपने तेवर ऐसे दिखाने शुरू कर दिए हैं मानो मई-जून की आग अभी से उतर आई हो। तेज धूप और लू के थपेड़ों ने जनजीवन को प्रभावित कर दिया है। दोपहर के समय सड़कों पर सन्नाटा पसरा नजर आ रहा है, जबकि लोग जरूरी काम भी टालने लगे हैं। बाजारों में चहल-पहल कम हो गई है और लोग घरों में रहने को मजबूर हैं।

रोहतक देश का 6वां सबसे गर्म शहर

देश में सबसे गर्म शहरों की सूची देशभर में तापमान के आंकड़ों पर नजर डालें तो सबसे अधिक गर्मी प्रयागराज में दर्ज की गई, जहां पारा 45.2 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा। दूसरे स्थान पर महाराष्ट्र का अकोला 45.0 डिग्री के साथ रहा। तीसरे स्थान पर ओडिशा का झारसुगुड़ा 44.8 डिग्री तापमान के साथ दर्ज किया गया। चौथे स्थान पर महाराष्ट्र का अमरावती भी 44.8 डिग्री के साथ रहा, जबकि वर्धा पांचवें स्थान पर रहा। छठे स्थान पर उत्तर प्रदेश का वाराणसी और हरियाणा का रोहतक शामिल रहे, जहां तापमान 44 डिग्री के पार रहा।

डिहाइड्रेशन और त्वचा संबंधी समस्याएं बढ़ने की आशंका

जनजीवन पर असर, स्वास्थ्य खतरे में लगातार बढ़ते तापमान का असर आम लोगों के स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। डॉक्टरों के अनुसार इस मौसम में लू लगने, डिहाइड्रेशन और त्वचा संबंधी समस्याएं बढ़ने की आशंका रहती है। खासकर बच्चों और बुजुर्गों को अधिक सावधानी बरतने की जरूरत है। प्रशासन की अपील प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे दोपहर के समय घर से बाहर निकलने से बचें, अधिक से अधिक पानी पिएं और हल्के कपड़े पहनें। साथ ही छांव में रहने और जरूरी सावधानियां अपनाने की सलाह दी गई है। गर्मी का यह प्रकोप आने वाले दिनों में और बढ़ सकता है। ऐसे में रोहतक समेत पूरे प्रदेश के लोगों के लिए यह समय सतर्क रहने का है।

शहर की करीब 15 कॉलोनियों में आज लगेंगे बिजली के कट

- औद्योगिक क्षेत्रों में भी कामकाज पड़ सकता है ठप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शहर में रविवार सुबह निर्धारित बिजली कट के चलते आम जनजीवन प्रभावित रहेगा। करीब 15 कॉलोनियों में बिजली कट लगेंगे। सुबह के व्यस्त समय में बिजली आपूर्ति बाधित होने से न केवल प्रमुख बाजारों की गतिविधियां प्रभावित होंगी, बल्कि औद्योगिक क्षेत्रों में भी कामकाज ठप पड़ सकता है। सब्जी मंडी चौक से लेकर रेलवे रोड और आईडीसी क्षेत्रों तक बिजली न होने के कारण दुकानदारों, व्यापारियों और आम लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ेगी। घरों में भी लोगों को गर्मी और दैनिक कार्यों में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

ये रहेगा कट का समय

सुबह 7:30 से 9 बजे तक

सुबह 7:30 बजे से लेकर 9:00 बजे तक सब्जी मंडी चौक, गुलाब रेवड़ी चौक, चमेली मार्केट, कसाई चौक, कच्चा बेरी रोड, इंदिरा मार्केट, रेलवे रोड और गौड़ कॉलेज बाबरा चौक जैसे प्रमुख क्षेत्रों में बिजली कट रहेंगे।

सुबह 8 से 10 बजे तक

सुबह 8 बजे से 10 बजे तक 11 केवी आईडीसी नंबर 3, आईडीसी नंबर 5, पी.दास, पंचरत्न, जैन आईपी, सिंगला स्कू, शास्त्री नगर, श्याम कॉलोनी, एके ऑटोमैटिक्स 1 व 2, सैनिक कॉलोनी और हिसार रोड जैसे क्षेत्रों में बिजली गुल रहेगी। इससे उद्योगों और छोटे कारोबारियों का काम प्रभावित होगा। औद्योगिक इकाइयों में मशीनें बंद रह सकती है।

दिनचर्या हो रही प्रभावित

कई लोगों ने बताया कि सुबह का समय सबसे व्यस्त होता है और ऐसे में बिजली कट से दिनचर्या पर असर पड़ता है। हालांकि बिजली निगम की ओर से यह कट निर्धारित बताया जा रहा है, लेकिन लोगों का कहना है कि बार-बार बिजली कट से कामकाज प्रभावित होता है।

शॉर्ट सर्किट ने मचाई तबाही घर में भड़की आग, छत गिरी

- धुएं से बेटा बेहोश, जिसे तुरंत अस्पताल में भर्ती करवाया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

शुगर मिल कॉलोनी में शनिवार को एक घर में अचानक लगी आग ने परिवार को पलभर में संकट में डाल दिया। शॉर्ट सर्किट से भड़की आग ने देखते ही देखते पूरे कमरे को अपनी चपेट में ले लिया। आग इतनी भीषण थी कि कमरे की छत तक गिर गई, जबकि घर में मौजूद परिवार को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। धुएं के कारण एक बच्चा बेहोश हो गया, जिसे तुरंत अस्पताल में भर्ती करवाया गया। घटना सुखदेव पार्क के पास स्थित एक मकान की है, जहां आग लगने के समय परिवार के सभी सदस्य घर के अंदर ही मौजूद थे। अचानक शॉर्ट सर्किट हुआ और देखते ही देखते घर धुएं से भर गया। स्थिति को भांपते हुए महिला पिंकी ने सबसे पहले अपने बच्चों को बाहर निकाला और फिर पति के साथ सुरक्षित बाहर आ गई। हालांकि, इस दौरान घर के अंदर रखा सारा सामान आग की भेंट चढ़ गया।

पड़ोसियों ने दिखाई तत्परता

आग लगने के बाद आसपास के लोगों ने तुरंत मदद के लिए दौड़ लगाई। पड़ोसी रवि ने बताया कि वह उस समय अपने घर में पशुओं को नहला रहा था, तभी उसे धुआं उठता दिखाई दिया। जैसे ही उसने बाहर आकर देखा, पड़ोस के घर में आग लगी हुई थी। उसने बिना समय गंवाए पाइप से पानी डालना शुरू किया। इसके बाद अन्य लोग भी मौके पर पहुंच गए और सबमर्सिबल चलाकर आग बुझाने में जुट गए।

धुएं से बिगड़ी हालत

आग से ज्यादा नुकसान धुएं ने पहुंचाया। पूरे घर में फैले घने धुएं के कारण परिवार का दम घुटने लगा। इसी दौरान एक बच्चा बेहोश हो गया। परिजनों और पड़ोसियों ने उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया, जहां उसका इलाज चल रहा है।

दस्तावेज भी जले

पीड़ित परिवार के अनुसार, आग में घर का लगभग सारा सामान जलकर नष्ट हो गया। इसमें फ्रिज, कूलर, इनवर्टर, रसोई का सामान, अलमारी और अन्य जरूरी घरेलू वस्तुएं शामिल हैं। सबसे बड़ा नुकसान बच्चों के शैक्षणिक प्रमाणपत्रों और जरूरी दस्तावेजों के जलने से हुआ है।

शहर में आज

- आंबेडकर चौक पर रक्तदान शिविर सुबह 10 बजे
- वार्ड-10 में स्वच्छता को लेकर जागरूकता अभियान सुबह 8 बजे

वॉक-इन इंटरव्यू 27 अप्रैल को

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) के शिक्षा विभाग में 4 वर्षीय इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आईटीईपी) के लिए सेमेस्टर आधार पर गेस्ट फैकल्टी (लेक्चर बेसिस) की भर्ती के लिए 27 अप्रैल को वॉक-इन इंटरव्यू आयोजित किया जाएगा। शिक्षा विभाग की अध्यक्ष डॉ माधुरी हुड्डा ने बताया कि यह वॉक-इन इंटरव्यू सुबह 11 बजे से शिक्षा विभागाध्यक्ष के कार्यालय में शुरू होगा। इच्छुक अभ्यर्थी अपने सभी संबंधित दस्तावेज 27 अप्रैल को सुबह 10 बजे तक शिक्षा विभाग के कार्यालय में जमा कर दें। अंग्रेजी, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, भूगोल और अकाउंट्स विषयों के लिए एक-एक पद निर्धारित किया गया है।

पुलिस ने आईएमटी पुल के नीचे दबोचा युवक, देशी पिस्तौल बरामद

रोहतक। सीआईए-2 टीम ने गश्त के दौरान एक युवक को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से एक देशी पिस्तौल बरामद हुई है।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ शस्त्र अधिनियम के तहत केस दर्ज कर उसे अदालत में पेश किया, जहां से आगे की पूछताछ के लिए प्रक्रिया जारी है। पुलिस प्रवक्ता मनीष के अनुसार, 24 अप्रैल को सीआईए-2 की टीम नियमित गश्त पर थी। टीम रोहतक-खरखौदा रोड स्थित आईएमटी पुल के नीचे मौजूद थी, तभी उन्हें एक संदिग्ध युवक के बारे में सूचना मिली। सूचना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस टीम ने तुरंत कार्रवाई शुरू की। पुलिस ने आईएमटी बलियाना रोड पुल के नीचे घेराबंदी कर युवक को शक के आधार पर काबू किया। पूछताछ में उसकी पहचान अमित पुत्र दयानंद निवासी आसंडा, जिला झज्जर के रूप में हुई। नियमानुसार तलाशी लेने पर युवक के पास से एक देशी पिस्तौल बरामद हुई, जिसके बारे में वह कोई वैध दस्तावेज पेश नहीं कर सका। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी से गहन पूछताछ की जा रही है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि वह किसी आपराधिक नेटवर्क से जुड़ा है या नहीं।

इंडस पब्लिक स्कूल में साइबर सुरक्षा पर कार्यशाला

- सोशल मीडिया सुरक्षा और डिजिटल गोपनीयता पर चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

दिल्ली रोड स्थित इंडस पब्लिक स्कूल में शनिवार को को शिक्षकों के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का विषय "साइबर सुरक्षा" रहा, जिसका उद्देश्य डिजिटल युग में बढ़ते ऑनलाइन खतरों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और सुरक्षित इंटरनेट उपयोग के तरीकों की जानकारी देना था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में शिक्षाविद् एवं विशेषज्ञ मंजू छिल्लर और हरीश दहिया मौजूद रहे। मंजू छिल्लर ने सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग, डिजिटल पहचान के प्रभाव और ऑनलाइन गोपनीयता के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कई बार अनजाने में साझा की गई जानकारी भी बड़े खतरे का कारण बन सकती है, इसलिए सतर्क रहना बेहद जरूरी है। तकनीकी सत्र में हरीश दहिया ने विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों जैसे फर्जी संदेशों के जरिए ठगी, ऑनलाइन उत्पीड़न और इंटरनेट धोखाधड़ी से बचाव के व्यावहारिक उपाय बताए। उन्होंने मजबूत पासवर्ड बनाने और दोहरी सुरक्षा प्रणाली अपनाने पर विशेष जोर दिया, जिससे खातों को सुरक्षित रखा जा सके।

शिक्षकों ने भी रखे सवाल

कार्यशाला के अंत में शिक्षकों ने अपने सवाल रखे, जिनका विशेषज्ञों ने विस्तार से समाधान किया। इस दौरान रोजमर्रा की डिजिटल चुनौतियों और उनके समाधान पर भी चर्चा हुई। स्कूल के प्रधानाचार्य दीपक वशिष्ठ ने अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आज के समय में बच्चों के लिए तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ साइबर सुरक्षा की समझ होना भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने इस प्रकार के कार्यक्रमों को समय की जरूरत बताया। इस अवसर पर स्कूल का पूरा स्टाफ मौजूद रहा और सभी ने कार्यशाला को ज्ञानवर्धक और उपयोगी बताया।

विद्या श्री चैरिटेबल ट्रस्ट ने निभाई दान की परंपरा

रोहतक। 19 वर्ष पुरानी दान की परंपरा को निभाते हुए विद्याश्री चैरिटेबल ट्रस्ट ने गरीब विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म वितरित की। बड़ा बाजार स्थित आर्य स्कूल में यूनिफॉर्म वितरण का कार्य किया गया। ट्रस्ट के प्रधान अनिल भटनागर ने बताया कि ट्रस्ट पूरे भारत में यह दान का कार्य कर रहा है। इस अवसर पर सदस्य सुरेंद्र, सीए राकेश गुप्ता, पारस शर्मा, प्रिंसिपल भूपेंद्र सोलंकी तथा स्टाफ मेंबर भी उपस्थित थे। प्रधान ने सहयोग के लिए सदस्यों का धन्यवाद किया।

सीआईए इंस्पेक्टर के समर्थन में सिंहमार खाप की पंचायत

दुष्यंत चौटाला और सीआईए इंचार्ज इंस्पेक्टर पवन के बीच विवाद का मामला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महम

हिसार में पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला और सीआईए इंचार्ज इंस्पेक्टर पवन के बीच हुआ विवाद महम चौबीसी तक पहुंच गया है। इस मुद्दे पर शनिवार को महम अनाज मंडी में सिंहमार खाप की पंचायत हुई। पंचायत की अध्यक्षता खाप प्रधान दलशेर ने की। इस पंचायत में सिंहमार खाप के अलावा महम क्षेत्र के विभिन्न गांवों से लोग पहुंचे थे। इस दौरान पंचायतियों ने पूर्व सीएम दुष्यंत चौटाला की आलोचना की और सीआईए इंस्पेक्टर पवन सिंहमार की प्रशंसा की। वक्ताओं ने कहा कि दुष्यंत चौटाला को एक इंस्पेक्टर के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए। यह उनकी औच्छी मानसिकता को दर्शाता है। खुद गाड़ी में से उतरकर इंस्पेक्टर के साथ हाथापाई करने का प्रयास किसी भी सूरत में सहन करने लायक नहीं है। दुष्यंत चौटाला का इस मुद्दे पर सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए। दुष्यंत चौटाला के खिलाफ महम में चौबीसी चबूतरे पर महापंचायत भी बुलाई जा सकती है। इंस्पेक्टर पवन सिंहमार खेड़ी महम गांव के रहने वाले हैं और उनके पूर्वज सीसर खास गांव से आकर यहां बसे थे। पंचायतियों ने पवन को मेहनती और एक अच्छा खिलाड़ी बताया। कहा कि अपनी मेहनत के बलबूते पर अब तक वह कई बार सम्मानित हो चुका है। इस दौरान 11 सदस्यीय कमेटी गठित की गई।

नवीन जयहिंद ने आप नेता पर लगाए आरोप

रोहतक। सामाजिक कार्यकर्ता नवीन जयहिंद ने शनिवार को आप नेता अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी पर तीखे आरोप लगाए। उन्होंने

पार्टी की स्थिति पर सवाल खड़े किए। जयहिंद ने कहा कि आप में टूट- फूट का माहौल है और इसका फैसला अब जनता खुद करेगी। उन्होंने दावा किया कि वे 2007 से पार्टी से जुड़े रहे और अन्ना आंदोलन से लेकर 28 दिन की सरकार तक सक्रिय भूमिका निभाई, लेकिन अब बिना किसी दबाव के सच सामने रख रहे हैं।उन्होंने सांसदों को गद्दार कहे जाने पर सवाल उठाते हुए कहा कि असली गद्दार कौन है, जो सच बोल रहा है या जो कई साल से छुपा रहा है।

प्रवेश की हत्या का आरोपी जेठ गिरफ्तार

रोहतक। गांव रिठाल में महिला प्रवेश की हत्या का पुलिस ने खुलासा करते हुए आरोपी जेठ जसबीर को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार, घरेलू पाबंदियों और छोटी-छोटी बातों को लेकर आरोपी के मन में गुस्सा पनप रहा था,

जो 19 अप्रैल को तेजधार हथियार से हमला कर हत्या में बदल गया।घटना के तुरंत बाद गंभीर रूप से घायल प्रवेश को अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन 20 अप्रैल को इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू की और तकनीकी व स्थानीय सूचनाओं के आधार पर 24 अप्रैल को जसबीर को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया। उसे दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।प्रारंभिक जांच में सामने आया कि आरोपी लंबे समय से महिला पर पाबंदियां लगाता था। वह उसे घर से बाहर जाने और सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होने से रोकता था। करीब एक महीने पहले भी उसने प्रवेश को रिश्तेदारी में जाने से मना किया था, लेकिन महिला गई। इसी नाराजगी के चलते आरोपी ने खौफनाक कदम उठाया।पुलिस का कहना है कि आरोपी लंबे समय से दबाव बना रहा था और यही तनाव हिंसा में बदल गया। मामले की गहनता से जांच की जा रही है और आरोपी के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक
ऑफिस नं.: 9253681019-20,
फोन : 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

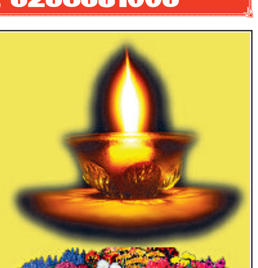

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
सिटी कार्यालय :- हरिभूमि, कृषि विज्ञान केन्द्र के सामने, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9996959400
मुख्य कार्यालय :- हरिभूमि, नजदीक इण्डस पब्लिक स्कूल, दिल्ली रोड, रोहतक फोन : 9253681019-20

पहल उज्ज्वल भविष्य के लिए संगठित पहल, खेल मैदानों में 150 से अधिक बच्चे कर रहे अभ्यास

- अनुभव सहयोग और संगठन का संगम
- अन्य गांवों के लिए बन सकता है मॉडल
- सामूहिक फंड के जरिए बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाएं चलाई जा रही

बच्चों को अपराध की छाया से बचाने के लिए गांव रिटौली बन रहा मिसाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

गांव रिटौली इन दिनों एक नई पहचान गढ़ रहा है। यह गांव जहां आपराधिक गतिविधियों के कारण चर्चा में रहता है, वहीं दूसरी ओर लोगों ने मिलकर ऐसी पहल शुरू की है, जो बच्चों के भविष्य को नई दिशा देगी। गांव के बुद्धिजीवियों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों, व्यापारियों और विभिन्न विभागों में कार्यरत लोगों ने मिलकर एक संगठन का गठन किया है। इसकी खासियत यह है कि हर सदस्य हर महीने एक निश्चित आर्थिक योगदान देता है, जिससे बच्चों के विकास के लिए स्थायी व्यवस्था बनाई गई है। यह प्रयास किसी खेत में उगती नई फसल जैसा है, जिसे पूरे गांव ने मिलकर सींचा है ताकि आने वाली नस्लें मजबूत बन सकें।

पढ़ाई में सहयोग और पोषण पर विशेष ध्यान

सामूहिक फंड के जरिए बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाएं चलाई जा रही हैं। खेल कोच की व्यवस्था, खेल उपकरणों की उपलब्धता, पढ़ाई में सहयोग और पोषण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसका असर अब साफ दिखने लगा है। जहां पहले मैदान खाली रहते थे, वहीं अब रोजाना 150 से अधिक बच्चे खेल गतिविधियों में हिस्सा ले रहे हैं। बच्चों के चेहरे पर आत्मविश्वास की चमक इस बदलाव की सजीव तस्वीर बन गई है।

हर महीने प्रतियोगिता

हर बच्चे को मौका गांव में खेलों को बढ़ावा देने के लिए हर महीने के पहले रविवार को प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों को सम्मानित किया जाता है, जिससे उनमें प्रतिस्पर्धा और आत्मविश्वास बढ़ता है। इस पहल में अनुभवी लोग मार्गदर्शन दे रहे हैं, व्यापारी आर्थिक सहयोग कर रहे हैं और नौकरीपेशा लोग संगठन को व्यवस्थित तरीके से चला रहे हैं।

बेहतर माहौल देने का प्रयास : बरखा देवी

सरपंच बरखा देवी कहती हैं कि अगर बच्चों को सही समय पर सही दिशा और सही अवसर मिल जाएं, तो उनकी प्रतिभा किसी भी सीमा में बंधी नहीं रहती। वे खेल, शिक्षा, कला या किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं और अपनी अलग पहचान बना सकते हैं। यही सोच इस मॉडल की नींव है, जहां गांव के लोग मिलकर बच्चों को बेहतर माहौल, संसाधन और मार्गदर्शन देने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस पहल के माध्यम से बच्चों को अनुशासन, मेहनत और प्रतिस्पर्धा का महत्व समझाया जा रहा है, ताकि वे भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकें। गांव के सामूहिक सहयोग से यह विश्वास मजबूत हुआ है कि सही दिशा मिलने पर बच्चे न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे गांव का नाम रोशन कर सकते हैं।

सपनों को दिशा देने का प्रयास

रिटौली का नाम कुछ समय पहले से आपराधिक गतिविधियों के कारण चर्चा में रहा है। इसी पृष्ठभूमि में गांव के जिम्मेदार लोगों ने महसूस किया कि यदि युवाओं को सही दिशा और अवसर नहीं मिले, तो वे भटक सकते हैं। यही सोच इस पहल की नींव बनी। अब बच्चों को खेल, शिक्षा और अनुशासन की ओर प्रेरित किया जा रहा है, ताकि वे नकारात्मक रास्तों से दूर रहकर अपने सपनों को साकार कर सकें।

बदलेंगे नकारात्मक छवि

छवि बदलने की मुहिम इस पहल की सबसे बड़ी ताकत इसका सामूहिक स्वरूप है। पूरा गांव मिलकर जिम्मेदारी उठा रहा है। सेवानिवृत्त कर्मचारी अनुभव दे रहे हैं, युवा ऊर्जा और प्रेरणा दे रहे हैं, जबकि व्यापारी आर्थिक मजबूती प्रदान कर रहे हैं। यह संगठित प्रयास गांव की पहचान बदलने की दिशा में मजबूत कदम साबित हो रहा है। रिटौली की यह पहल एक स्पष्ट संदेश देती है कि यदि समाज एकजुट हो जाए, तो किसी भी नकारात्मक छवि को बदला जा सकता है।

विशेषः अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस 29 अप्रैल

आवरण कथा / प्रस्तुतिः रेणु खंतवाल

नृत्य ऐसी कला है, जो जीवन को उमंगित कर देती है। जिनके जीवन में नृत्य शामिल होता है, वे हर पल संतुलित, आनंदित महसूस करते हैं। नृत्य दिवस के अवसर पर यहां अलग-अलग शैली के नर्तक और नृत्यांगनाएं बता रहे हैं नृत्य का उनके जीवन में क्या महत्व है? यानी, नृत्य ने उनके जीवन को किस-किस स्तर पर बदला, उसे अलग दिशा प्रदान की? जब नृत्य के दौरान वे उसमें पूरी तरह खो जाते हैं तो उस समय किस तरह की अनुभूति होती है? और शारीरिक-मानसिक सेहत बेहतर करने में नृत्य की भूमिका को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

जीवन की सरगम पर तन-मन की थिरकन

नृत्य से जीवन में निखार आता है

कविता द्विवेदी, ओडिसी नृत्यांगना

नृत्य मेरे लिए जीवन है और मेरे जीवन में नृत्य है। मैं ऐसा महसूस करती हूं कि अगर मेरे जीवन में नृत्य नहीं होता तो मेरे जीवन का कोई अस्तित्व भी नहीं होता। नृत्य ने समय-समय पर मेरे जीवन को बदला, स्थापित किया। मुझे अलग-अलग स्तर पर पहचान दी, आगे बढ़ाया। इसी की वजह से मुझे कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली और देश दुनिया में अपनी कला दिखाने का अवसर मिला। मैं दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ पाई। सन 2013 में मुझे ओडिसा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। इस पुरस्कार का भी मेरे जीवन में बहुत महत्व रहा है। नृत्य के माध्यम से मैंने खुद को खोजा, समझा कि मुझमें क्या अच्छाई है, क्या कमी? जब भी मैं नृत्य करती हूं, उसमें खो जाती हूं। उसके बाद मैं नृत्य के शिखर बिंदु पर पहुंच जाती हूं। वहां तो मुझे अपनी कोई सुधबुध नहीं रहती। पूर्ण समर्पण के साथ मैं नृत्य में डूबी होती हूं। उस दौरान एक दिव्य शक्ति को महसूस करती हूं। जब मैं अपनी प्रस्तुति पूरी करती हूं, उसके बाद मुझसे कुछ बोला ही नहीं जाता, मैं चुप हो जाती हूं। कभी महसूस करती हूं कि अब मुझे एकांत चाहिए। जिस शक्ति के साथ मैं नृत्य कर रही थी, उसी शक्ति के साथ मैं कुछ वक्त बिताऊं। नृत्य से मुझे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है। हर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में नृत्य को शामिल करना चाहिए। नृत्य से जीवन में निखार आता है। नृत्य के माध्यम से आप समाज में अलग पहचान, महत्व बनाते हैं। बहुत त्याग और तपस्या से मैंने नृत्य के माध्यम से देश-दुनिया में एक अलग पहचान बनाई है। *

तन-मन-जीवन के लिए जरूरी है नृत्य

श्रुति सिन्हा, कथक नृत्यांगना

नृत्य मेरे जीवन का महत्वपूर्ण, बहुआयामी हिस्सा है। नृत्य ने मुझे जीने का सकारात्मक नजरिया दिया। मेरा शरीर, मन और आत्मा पूरे तरीके से नृत्य में डूबे रहते हैं। मैं नृत्य के जरिए खुद को बहुत मजबूत महसूस करती हूं। जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आते हैं, उससे उबरने में नृत्य मेरी बहुत सहायता करता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और पेशेवर स्तर पर नृत्य का मुझ पर बहुत प्रभाव रहा। आज नृत्य के कारण ही सामाजिक स्तर पर मुझे इतना मान-सम्मान मिलता है। नृत्यांगना, नृत्य शिक्षिका और कोरियोग्राफर के रूप में मेरी पहचान है। नृत्य ने ही मुझे सकारात्मक, ऊर्जावान बनाया। आत्म खोज व अनुशासन के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया। रचनात्मक नई सोच और कल्पनाशक्ति प्रदान की। इस तरह नृत्य ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है। कई बार नृत्य करते हुए मैं जब उसमें पूरी तरह खो जाती हूं, उस समय जो अनुभूति होती है उसे शब्दों में बताना मुश्किल है। उस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उस समय मैं सिर्फ अपने आप में लीन होकर नृत्य में डूबी होती हूं। शायद इसे ही नृत्य के जरिए मनुष्यत्व का देवत्व तक पहुंचना कहते हैं। नृत्य बहुत अच्छा व्यायाम भी है, जिससे शरीर लचीला, मजबूत और ऊर्जावान बनता है। नृत्य आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव, चिंता व अवसाद कम करता है। नृत्य, संगीत और ताल के साथ जुड़कर मन को खुशी व शांति देता है। मन को संतुलित करने के साथ-साथ पूरे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस तरह नृत्य शारीरिक और मानसिक सेहत दोनों के लिए बहुत लाभकारी होता है। मेरा मानना है कि नृत्य को अपने डेली रूटीन में शामिल करने से सकारात्मक सोच बढ़ती है। आलस नहीं रहता। शरीर बीमारियों से दूर रहता है। अतः हम किसी भी उम्र के हों, नृत्य जरूर करना चाहिए। *

नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है

बीके अतुल गोस्वामी, कंटेपरेरी डांसर-कोरियोग्राफर

मेरे लिए नृत्य केवल एक कला नहीं बल्कि मेरी पहचान है। नृत्य ने मेरे शरीर को शक्ति, मन को शांति और मेरी आत्मा को मुझसे जोड़ा है। जहां शब्द रुक जाते हैं, वहां से मेरा नृत्य शुरू होता है यानी नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब मैं नृत्य करता हूं और पीक पर पहुंच जाता हूं, उस समय मुझे यह महसूस होता है कि मैं डांस नहीं कर रहा हूं बल्कि मेरी आत्मा मेरे शरीर से डांस करवा रही है। उसके बाद हर बीट दिल की धड़कन बन जाती है और दुनिया कुछ पलों के लिए ठहर सी जाती है। डांस करते हुए मैं इस पीक को हमेशा महसूस करता हूं क्योंकि उन पलों में मैं खो जाता हूं। नृत्य केवल शरीर की ही नहीं बल्कि मन की थेरेपी भी होती है। नृत्य वो ताकत है, जो तनाव को भी ऊर्जा में बदल देता है। जैसे ही आप डांस करना शुरू करते हैं, शरीर में जितनी भी नकारात्मकता है, वह अपने आप रिलीज होने लगती है और आप बहुत हल्का महसूस करते हैं। अगर आप रूटीन में अपनी पसंद का कोई भी डांस शामिल करें तो यह आपको फ्रीडम का एहसास कराएगा। डांस के हर बीट पर आप अपने तनाव को कम करते जाते हैं। यह आपको शारीरिक रूप से तो फिट रखता ही है, साथ ही सोच व विचारों को सकारात्मक भी बनाता है। जब भी मैं तनाव महसूस करता हूं तो डांस करके खुद को हल्का और खुश महसूस करता हूं। इसलिए मैं तो यही सबसे कहता हूं कि हर इंसान को डांस जरूर करना चाहिए। *

नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के करीब ले जाता है

ऐश्वर्य हरीश, भरतनाट्यम नृत्यांगना

मेरे लिए नृत्य केवल जीवन का हिस्सा नहीं है बल्कि मेरा जीवन ही है। मैं अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी से हूं, जो नृत्य कला से जुड़ी है। नृत्य मेरे खून में रचा-बसा है। बचपन से मैं देखती आ रही हूं कि यह मेरे साथ इस तरह जुड़ गया कि कभी लगा ही नहीं कि मैं कुछ अलग काम कर रही हूं। नृत्य ने मुझे अनुशासन और धैर्य सिखाया। खुद को समझना सिखाया। जैसे-जैसे मैं नृत्य करती गई यह मेरे लिए केवल नृत्य नहीं रहा बल्कि साधना बन गया। नृत्य हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के और करीब ले जाता है। कई बार लगता है कि जो मैं शब्दों में नहीं कह पाती, वह नृत्य अपने आप कह देता है। नृत्य में जो पीक स्टेज होती है, उसे शब्दों में कह पाना मुश्किल है। क्योंकि उस समय आप नृत्य कर नहीं रहे होते बल्कि नृत्य बन जाते हो। एक अलग ही स्थिति होती है, जहां अहंकार धीरे-धीरे मिट जाता है। उस समय न तो समय का, न दर्शकों का और न ही मंच का बोध रहता है। बस लय भाव और एक प्रवाह रह जाता है। कभी लगता है कि बाहर और भीतर का भेद ही मिट गया है और जो कुछ भी हो रहा है, वह अपने आप हो रहा है और आप उसका आनंद ले रहे होते हैं। अगर आप कृष्ण और यशोदा का संवाद दिखा रहे हैं तो आप ही कृष्ण, आप ही यशोदा हो जाते हैं। यह बहुत गहरा आनंद होता है। यह वह पल होता है, जहां कला साधना और अध्यात्म, तीनों एक हो जाते हैं। नृत्य शरीर का संतुलन अभ्यास भी है। इससे स्ट्रेंथ और स्टेमिना बढ़ता है। नृत्य की मुद्राएं शरीर में एक संतुलन उत्पन्न करती हैं और धीरे-धीरे यही संतुलन आपके जीवन जीने के तरीके और व्यवहार में भी आता है। जब आप नियमित रूप से नृत्य करते हैं तो एकाग्रता अपने आप बढ़ने लगती है। मन स्थिर हो जाता है। जीवन में तनाव भी कम होने लगता है। मेरा मानना है कि कला इंसान को सकारात्मक बनाती है। जब आप संगीत के साथ थोड़ी देर लय ताल में थिरकते हैं तो आपकी ऊर्जा अपने आप बदलने लगती है। *

मोबाइल स्क्रीन पर सिमटता सिनेमा
माइक्रो-सीरीज का चढ़ता सूरज!

न्यू ट्रेंड / गौरव द्विवेदी

फिल्म, टीवी सीरियल, वेब-सीरीज और शॉर्ट फिल्म्स के बाद अब माइक्रो-सीरीज का ट्रेंड तेजी से पॉपुलर हो रहा है। इसके पॉपुलर होने की क्या वजहें हैं। यह किस तरह से एंटरटेनमेंट स्टाइल को पूरी तरह बदल रहा है, इस पर एक नजर।

भारत में मनोरंजन की दुनिया एक दिलचस्प मोड़ पर है। सिनेमा अब बड़े पर्दे से निकलकर मोबाइल स्क्रीन में सिमट रहा है। इस बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है माइक्रो-सीरीज और वर्टिकल वीडियो। यह केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि एक वैश्विक बदलाव है। अनुमान है कि 2025 तक दुनिया के कुल इंटरनेट ट्रैफिक का लगभग 82% वीडियो कंटेंट का रहा, जिसमें शॉर्ट, वर्टिकल वीडियो का दबदबा सबसे ज्यादा था।

बढ़ रहा शॉर्ट वीडियो मार्केटः इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स ने देखने की आदत को पूरी तरह बदल दिया है। अब दर्शक 'देखता' नहीं, बल्कि 'स्क्रॉल' करता है, और हर स्क्रॉल में कहानी फिट होनी चाहिए। भारत में इस बदलाव की गति और भी तेज है। एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में 100 मिलियन (10 करोड़) से अधिक दर्शक पहले ही माइक्रो-ड्रामा कंटेंट देख रहे हैं। यानी यह अब मनोरंजन की मुख्यधारा बन चुका है। वैश्विक स्तर पर शॉर्ट वीडियो मार्केट का आकार 2026 में लगभग 59 अरब डॉलर आंका जा रहा है, जो 2033 तक बढ़कर 118 अरब डॉलर से ज्यादा का हो सकता है। सिर्फ वर्टिकल वीडियो सेगमेंट ही 2025 में लगभग 67% हिस्सेदारी तक पहुंच चुका है, जो इस फॉर्मेट की ताकत को दर्शाता है।

घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिकाः भारत में इस उभार के पीछे घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिका है। 'कुकु टीवी' जैसे प्लेटफॉर्म ने वर्टिकल माइक्रो-ड्रामा को एक नई पहचान दी है। इसके 1.2 करोड़ (12.7 मिलियन) से अधिक डाउनलोड्स हो चुके हैं, जबकि इसके ऑडियो प्लेटफॉर्म 'कुकु एफएम' ने 1 करोड़ से अधिक पेड सब्सक्राइबर्स का आंकड़ा पार कर लिया है। इसी तरह 'मोज' और 'जोश' जैसे भारतीय शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने मिलकर 300 मिलियन (30 करोड़) से अधिक यूजर इकोसिस्टम तैयार कर लिया है। नई श्रेणी के प्लेटफॉर्म जैसे 'क्विक टीवी', 'टुकटुकी', 'कटिंग' भी 2–5 मिनट के एपिसोड्स के साथ तेजी से उभर रहे हैं, और कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार हाल के महीनों में ही 150 मिलियन व्यूअर्स ने माइक्रो-सीरीज कंटेंट देखा, जबकि रोजाना एपिसोड व्यूज 100 मिलियन तक पहुंच गए।

अन्य देशों में भी बढ़ रही पॉपुलैरिटीः चीन इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां 'डुआंजू' (माइक्रो ड्रामा) इंडस्ट्री तेजी से एक समानांतर फिल्म उद्योग बन चुकी है। वहीं अमेरिका में भी 'ड्रामा बॉक्स' जैसे प्लेटफॉर्म्स करोड़ों यूजर्स के साथ पारंपरिक ओटीटी को चुनौती दे रहे हैं। इतना ही नहीं, यू-ट्यूब शॉर्ट्स पर रोजाना दो सौ अरब व्यूज तक का आंकड़ा सामने आता है, जो इस बदलाव की गति को दर्शाता है।

तेजी से बढ़ रहा ट्रेंडः भारत में यह ट्रेंड और तेजी से बढ़ रहा है। सस्ते डेटा, 5जी और स्मार्टफोन के प्रसार ने इसे जन-आंदोलन बना दिया है। टियर-2 और टियर-3 शहरों में युवा दर्शक अब माइक्रो-सीरीज को न केवल देख रहे हैं, बल्कि बना भी रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह मॉडल बेहद आकर्षक है। जहां एक

पारंपरिक टीवी शो के एक एपिसोड पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं, वहीं एक वर्टिकल सीरीज का पूरा सीजन कुछ लाख में बन सकता है। हालांकि, इस तेजी के साथ कुछ खतरे भी हैं। जैसे-कहानियों की गहराई कम हो रही है और एल्गोरिदम यह तय कर रहा है कि क्या चलेगा? फिर भी, यह मानना होगा कि यह बदलाव अस्थायी नहीं है। यह भारतीय मनोरंजन उद्योग के नए ढांचे की नींव है। आने वाले समय में बड़ी फिल्में और वेब-सीरीज पहले माइक्रो-फॉर्मेट में अपनी लोकप्रियता साबित करेंगी। अब सिनेमा देखा नहीं जाता, स्क्रॉल किया जाता है। और जो स्क्रॉल में फिट हो जाए, वही नया सिनेमा है। *

(लेखक फिल्म पॉलिसी के जानकार हैं)

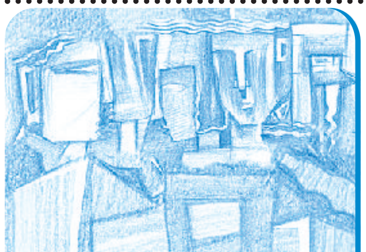

गीत / कृष्ण बिहारी

सबकी अपनी सीमाएं हैं

कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं,
हर कोई रीता-रीता है
कहने को सभी अघाए हैं।
अतृप्त जिंदगी छूंछी-सी
ऊपर से दिखती सजी-धजी
गर पास बुलाकर बैठा लो
तो लगती कितनी बुझी-बुझी
भ्रम के साए में सभी यहां
मुरदा पहचान बनाए हैं।
पेट काट जो तन ढंकती थी
वही भरे पेट अब नंगी है
नाच-नाचकर कहे सभ्यता
दुनिया यह रंग-बिरंगी है
रंग-रोगन से पुते हुए सब
भीतर-भीतर मुरझाए हैं।
जब देह में मन अनुपस्थित हो
औ' रूप जिए केवल पीड़ा
मेले में भी तनहाई हो
औ' प्राण हीन हो हर क्रीड़ा
तो बात समझनी क्या मुश्किल
अपनों से भेद छिपाए हैं।
कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं।

व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय

शातिर अंतरात्मा गब्बर की

गब्बर की अंतरात्मा ने झकझोरते हुए कहा, 'तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब वही धंधा शहर में रह कर भी किया जा सकता है, तो बीहड़ में छिपकर क्यों रहा जाए?' एक रोज गब्बर की शातिर अंतरात्मा से आवाज आई, 'रे मूर्ख, परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। तू देखता ही होगा कि राजनेता आए दिन अपनी दलीय निष्ठाएं बदलते रहते हैं। बयानवीर अपने बयान बदल लेते हैं। सरकार में मंत्रियों के विभाग बदल जाते हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों के तबादले होते रहते हैं। जिनका स्थानांतरण किया जाता है, वे जब दूसरी जगहों पर तैनाती पाते हैं तो क्या उनके गुण-धर्म बदल जाते हैं? भ्रष्टाचारी को कहीं भी भेज दो, वह भ्रष्टाचारी ही रहेगा। उसे सदाचारियों की भीड़ के बीच बैठा दो, तब भी वह स्वयं तो सुधरेगा नहीं, वहां के लोगों को अपने जैसा जरूर बना लेगा। यह काम तो तू भी कर सकता है। तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब गब्बर की अंतरात्मा से यह आवाज बार-बार उठने लग गई, तब उसने एक शाम अपने गैंग के सदस्यों का एक पैनल बनाया और स्वयं एंकर की भूमिका में रहते हुए एक धुआंधार बहस की। एक बहसबाज दस्यु ने कहा, 'डकैती डालना घृणित कार्य है। अब हमें वैकल्पिक रोजगार की तलाश करनी चाहिए।' यह सुनकर दूसरे दुर्दांत बहसबाज ने घोर आपत्ति की, 'तुम बकवास कर रहे हो। डकैती तो हमारा पवित्र धर्म है। कोई हमारे धर्म को लेकर ऐसी बात कहेगा, तो मैं उसका सिर कलम कर दूंगा।' तीसरे बहसबाज डकैत ने कहा, 'अब डकैती के धंधे में पहले जैसी बरकत नहीं रही। मैं कल सरदार के आदेश पर एक गांव में गया था। वहां पर पहले हमारे जाते ही लोग अपने घरों से अनाज की बोरियां लाकर हमारे चरणों में धर दिया करते थे। इस बार मुझे पता चला कि सभी लोग खुद खाली थैले लेकर पांच किलो अनाज पाने के लिए सरकारी गल्ले की दुकानों पर गए हुए थे।' चौथे बहसबाज डाकू ने कहा, 'सरदार, अब आप ही बताइए, आपका निर्णय ही हमें दिशा दिखला सकता है।'

गब्बर ने बहस का समापन करते हुए कहा, 'मैंने तुम सबकी बातें ध्यानपूर्वक सुनी हैं और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि हमें अपना यह डकैती वाला धंधा छोड़ देना चाहिए और दूसरे वैकल्पिक रास्ते तलाशने चाहिए। हम इस घटाटोप जंगल में अड्डे बदलते-बदलते आजिज आ चुके हैं। ऊपर से हमेशा पुलिस का डर बना रहता है। साथ में मुखबिरी के खतरे तो हैं ही। क्या पता, अपने ही गैंग का कौन बंदा कब दगा दे जाए और हम सब एक दिन किसी एनकाउंटर में मार दिए जाएं! क्यों कालिया?' तब कालिया कहने लगा, 'सरदार, मैंने आपका नमक खाया है। घोर महंगाई में आपने हमें नीबू भी खिलाए हैं। आपकी कृपा बनी रहेगी तो हम आपके फार्म हाउस में बैठकर कल पिज्जा-बर्गर भी खाएंगे। वैसे भी यह कोई हमारा पुश्तैनी धंधा तो है नहीं कि इसे छोड़ देने में डकैतों की बिरादरी में हमारी नाक कट जाएगी। हम बीहड़ की जगह शहर में रहकर भी वहां के सम्मानित डकैतों जैसी शानदार जिंदगी जी सकते हैं।' उन सभी की बातें सुनकर गब्बर ने खैनी मलते हुए पूछा, 'अरे ओ सांभा, तू क्यों चुप है? तू भी तो बता कि हमें क्या करना चाहिए?' सांभा बोला, 'सरदार, आपने जो फैसला लिया है, वही सही है।'

इसके बाद उस इलाके में अपने बर्बर आतंक के चलते कुख्यात हो चुका गब्बर अब एक शरीफ डकैत बन चुका है। यूं भी कुख्यात और विख्यात होने में कोई खास अंतर नहीं होता है। मात्र जंगल और नगर का फर्क होता है। तो गब्बर और उसका गैंग अब सम्मानित डकैत बन चुके हैं। अब उस पर सरकारें इनाम नहीं घोषित करतीं हैं। अब वह खुद सरकारों को मदद-इमदाद करता है। अब पुलिस भी उसे ठोकने की फिराक में नहीं रहती, अलबत्ता वह उसे ही सलाम ठोंकती है। लेकिन कल गब्बर के साथ एक बुरी बात हो गई। उसके घर पर सीबीआई और ईडी का छापा पड़ गया। उसकी हवेली पर बुलडोजर चल गया। गब्बर अपने पूरे गैंग के साथ जेल में है और अपनी शातिर अंतरात्मा को तलाश रहा है। वह मिल जाए तो उसे गोली मार देगा। लेकिन गब्बर यह बात नहीं जानता है कि उसकी अंतरात्मा तो डकैती के धंधे में आते ही मर चुकी थी। यह उसका आंतरिक भय था, जिसको वह गलती से अपनी शातिर अंतरात्मा समझ बैठा था। *

लघुकथा / शीला श्रीवास्तव

एहसास

सड़क पर दूर से ही पुलिस वालों की चेकिंग होती देख कमलेश ने अपनी मोटरसाइकिल वापस घुमा ली। 'क्या हुआ, गाड़ी क्यों वापस घुमा रहे हो?' पीछे बैठे दोस्त ने पूछा। 'आगे चेकिंग चल रही है। इन पुलिस वालों को कोई काम धंधा है नहीं। जब देखो चौराहे पर खड़े होकर चेकिंग करना शुरू कर देते हैं। हेलमेट क्यों नहीं पहना? लाइसेंस कहां है? बिना नंबर की गाड़ी कैसे चला रहे हो? ढेरों सवाल पूछने लगते हैं। उनको तो बस लोगों को तंग करना होता है और कुछ नहीं।' कमलेश झुंझलाते हुए बोला। 'ऐसा क्यों बोल रहे हो? वो तो बेचारे अपनी ड्यूटी करते हैं।' दोस्त ने कमलेश को समझाने की कोशिश की। 'अरे, काहे की ड्यूटी! इनको तो बस अपनी जेब भरनी होती है और कुछ नहीं।' कमलेश खीझ भरे स्वर में बोला।

इस घटना के कुछ दिनों बाद कमलेश के बेटे का एक्सीडेंट हो गया। बिना नंबर वाली गाड़ी चला रहे किसी टेंपो ड्राइवर ने पीछे से उनके बेटे की बाइक पर जोरदार टक्कर मार दी थी। हेलमेट न पहनने की वजह से उनके बेटे के सिर पर गंभीर चोट लग गई थी। 'ये पुलिस वाले आखिर करते क्या हैं? बिना लाइसेंस, नंबर वाले अवैध वाहनों के खिलाफ, चेकिंग करके उन पर नियंत्रण क्यों नहीं करते?' कमलेश की पत्नी बिलखते हुए अपने पति से पूछ रही थी। आज कमलेश को अपनी उस दिन की गलती का एहसास हुआ। अब उसे पुलिस वालों की चेकिंग का महत्व समझ में आ गया था। *

पुस्तक चर्चा / कुलदीप सिंह भाटी

ग्लैमर की दुनिया का किस्सा

कथा साहित्य में किस्सागोई का एक विशिष्ट स्थान रहा है। कारण इसका यह है कि किस्सागोई में बात से बात निकलती चली जाती है। इस तरह इसमें रोचकता के साथ ही साथ जिज्ञासा भी बनी रहती है। वरिष्ठ कथाकार और शायर हबीब कैफी का नया उपन्यास 'काला, धौला और रंगीन' इसी किस्सागोई शैली में लिखा गया एक उम्दा उपन्यास है। इस कथा की मुख्य पात्र पलक है। फिल्मी दुनिया की यह सफल अभिनेत्री, जब एक साहित्यकार के आगे खुलने लगती है तो प्रायः बंद ही रहने वाली यह स्त्री जिंदगी की कई परतें खोलती चली जाती है। पता चलता है कि एक नामी राजघराने से ताल्लुक रखने वाली यह अभिनेत्री अपने क्षेत्र, फिल्मी दुनिया के साथ ही साहित्य, कला और संगीत आदि से भी बड़ी हद तक लगाव और जुड़ाव रखती है। संवेदनशील अभिनेत्री पलक इस बीच सहज ही अपनी जिंदगी की परतें भी खोलती चली जाती है तो पता चलता है कि एक्स्ट्रा जूनियर आर्टिस्ट से नामी अभिनेता बने, समीर से यह गहरे प्रेम में है। मानवीय गुणों से संपन्न नैसर्गिक अभिनेता समीर मस्त मौला स्वभाव के कारण पलक के प्रेम का ठीक-ठीक जवाब नहीं दे पाता। समय अपनी गति से गुजरता जाता है और एक दिन अचानक ही समीर दुनिया छोड़ जाता है। उपन्यास के अंत में पाठक पलक की सच्ची और गहरी मोहब्बत महसूस करते हैं तो उनका दिल भी भर आता है।

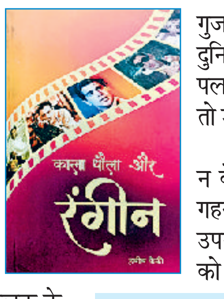

लगभग अपठनीयता के इस दौर में यह उपन्यास न केवल स्वयं को पढ़वा ले जाता है, अपितु एक गहरी कसक भी पाठक के मन में छोड़ जाता है। उपन्यास के भाषा की रवानगी भी इसकी पठनीयता को बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाती है। *

पुस्तकः काला, धौला और रंगीन (उपन्यास), **लेखकः** हबीब कैफी, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** कौटिल्य बुक्स, दिल्ली

केरल के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है एडथुआ पेरुनल उत्सव। केरल के लोकजीवन से जुड़े इस पर्व के प्रति कुछ अन्य राज्यों एवं विदेशी पर्यटकों के बीच भी काफी लगाव है। इस उत्सव से जुड़ी कुछ अनोखी-रोचक बातें आप जरूर जानना चाहेंगे।

सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक

धर्म-संस्कृति-सामाजिक समरसता का संदेश देता एडथुआ पेरुनल उत्सव

केरल की सांस्कृतिक पहचान सिर्फ इसके मंदिरों और पारंपरिक उत्सवों तक सीमित नहीं है। यहां के ईसाई समुदाय के पर्व भी उतने ही भव्य और जीवंत हैं तथा लोकजीवन से जुड़े हुए हैं। इन्हीं में से एक एडथुआ पेरुनल उत्सव है, जो मुख्यतः सेंट जॉर्ज को समर्पित है। इसे केवल केरल के महत्वपूर्ण ईसाई धार्मिक आयोजनों में ही नहीं गिना जाता बल्कि यह दूसरे दक्षिणी राज्यों के ईसाई समुदायों के साथ-साथ दुनिया भर के सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आयोजन है। एडथुआ पेरुनल उत्सव हर साल अप्रैल के अंत से मई की शुरुआत तक लगभग 10 दिनों तक मनाया जाता है। इस साल यह 27 अप्रैल से 7 मई 2026 तक मनाया जाएगा।

हर दिन अलग-अलग आयोजन: इस उत्सव के दौरान चर्च परिसर और उसके आस-पास के पूरे क्षेत्र में एक विशाल मेले का आयोजन होता है। हजारों श्रद्धालु आस्था और श्रद्धा से इस उत्सव में भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक पर्यटक भी इसका हिस्सा बनने के लिए देश-विदेश से आते हैं। उत्सव की शुरुआत विशेष प्रार्थनाओं और ध्वजारोहण से होती है। इसके बाद हर दिन अलग-अलग धार्मिक अनुष्ठान, जुलूस और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अंतिम दिन का जुलूस या प्रोसेशन सबसे भव्य होता है, जिसमें सेंट जॉर्ज की प्रतिमा को सुसज्जित रथ पर निकालकर पूरे गांव में घुमाया जाता है। इस उत्सव के दौरान एक तरफ प्राचीन अनुष्ठान होते हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक व्यवस्थाएं भी आयोजन का हिस्सा होती हैं।

आस्था एवं सामूहिक विश्वास का संगम: एडथुआ पेरुनल का धार्मिक महत्व भी खूब है, क्योंकि सेंट जॉर्ज के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है। श्रद्धालुओं के मुताबिक इस उत्सव में भाग लेने से उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। विशेषकर बीमारियों और मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए, लोग अपनी तरह-तरह की मन्नतें मांगते हैं और उनके पूरे होने पर सेंट जॉर्ज को धन्यवाद देने के लिए बार-बार इस उत्सव में शामिल होने का संकल्प लेते हैं। इसलिए, यह पारंपरिक आयोजन व्यक्तिगत आस्था और सामूहिक विश्वास का भी संगम बन जाता है।

केरल की सांस्कृतिक विशिष्टता का दर्शन: एडथुआ पेरुनल, धार्मिक के साथ-साथ एक सांस्कृतिक उत्सव भी है, इसलिए यह केरल की सार्वभौमिक सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। इसमें दूसरे कई उत्सवों की तरह सजे-धजे हाथियों के साथ जुलूस निकाला जाता है, जो केरल के विशिष्ट उत्सवों की सबसे खास पहचान है। लोग पारंपरिक संगीत और लोकनृत्य का लुत्फ उठाते हैं। स्थानीय बैंड, चर्च संगीत और लोकनृत्य इस उत्सव को विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस उत्सव के दौरान रात के समय भव्य आतिशबाजी के नजारे भी देखने को मिलते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी है महत्वपूर्ण: इस उत्सव का स्थानीय अर्थव्यवस्था के साथ भी एक बेहद गहरा और सकारात्मक रिश्ता है। उत्सव के दौरान अलग-अलग राज्यों एवं विदेशों से आए पर्यटक यहां की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देते हैं। अलग-अलग आजीविकाओं से जुड़े लोगों को उत्सव के दौरान रोजगार प्राप्त होता है या विशेष आय प्राप्त होती है।

विविधता में एकता का संदेश: एडथुआ पेरुनल उत्सव की एक अनोखी विशेषता इसकी सामाजिक समरसता है। यह उत्सव धार्मिक सीमाओं से परे जाकर लोगों को आपस में जोड़ता है, विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग मिलकर उत्सव मनाते हैं। ऐसे में यह एकता में विविधता का जीवंत उदाहरण बन जाता है। यह उत्सव इस बात को भी दर्शाता है कि बहुरंगी भारतीय संस्कृति में गहरा साझा भाव भी है। केरल जैसे राज्य में जहां साक्षरता और सामाजिक जागरूकता उच्च स्तर पर है, ऐसे आयोजन समाज को अधिक मजबूत बनाते हैं। आज के समय में जब समाज में विभाजन और तनाव की खबरें अक्सर आती रहती हैं, एडथुआ पेरुनल जैसे उत्सव हमें सकारात्मक संदेश देते हैं। यह उत्सव सिखाता है कि धर्म और संस्कृति लोगों को जोड़ने का माध्यम हो सकते हैं, न कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करने का।

कुल मिलाकर एडथुआ पेरुनल उत्सव सिर्फ धार्मिक भाव का पर्व नहीं है, यह आस्था, संस्कृति और सामाजिक एकता का जीवंत प्रतीक है। यह उत्सव केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है, जिसमें विभिन्न धर्मों और परंपराओं का सुंदर संगम देखने को मिलता है। एडथुआ पेरुनल उत्सव श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, वहीं यह भारतीय संस्कृति की उस व्यापक सोच का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो विविधता में एकता को सबसे बड़ा मूल्य मानती है। *

एडथुआ पेरुनल उत्सव की प्रमुख विशेषताएं

- यह अलप्पुझा (केरल) के एडथुआ गांव में मनाया जाता है और इसका मुख्य स्थल सेंट जॉर्ज फॉरेन चर्च है।
- यह हर साल 10 दिनों तक अप्रैल के अंत और मई की शुरुआत में मनाया जाता है।
- सेंट जॉर्ज को समर्पित इस सांस्कृतिक उत्सव की सबसे खास विशेषता है, इसका भव्य धार्मिक जुलूस। इस जुलूस में सजे-धजे हाथियों की परेड देखने को मिलती है, साथ ही इस दौरान पारंपरिक संगीत और नृत्य की छटा बिखरती है तथा आतिशबाजी का भी खूब रंग-बिरंगा उत्सव देखने को मिलता है।
- इसमें विभिन्न धर्मों की भागीदारी होती है, इसमें हिस्सा लेने वाले लोगों का एक बड़ा तबका ऐसे आस्थावान लोगों का होता है, जो अपनी असाध्य बीमारियों से मुक्ति पाने की इच्छा से यहां आते हैं और बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए मन्नतें मांगते हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है

प्रेरक व्यक्तित्व
डॉ. पुरुषोत्तम लाल

पंजाब के मोगा जिले के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखने वाले डॉक्टर पुरुषोत्तम लाल का शुरुआती जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। लेकिन अपने अथक परिश्रम और समाज के लिए कुछ करने के संकल्प के चलते मेडिकल क्षेत्र में उन्होंने अद्वितीय मुकाम हासिल किया। डॉक्टर पुरुषोत्तम भारत में इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी के फादर कहे जाते हैं। वह देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से विभूषित हैं। डॉ. पुरुषोत्तम लाल के प्रेरक जीवन का सफर उन्हीं की जुबानी।

आसान नहीं था आरंभिक जीवन: मेरा बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। हमारा पूरा ध्यान बस इस बात पर होता था कि घर कैसे चले और पढ़ाई कैसे पूरी हो? हम सभी भाई एक ही लैंप की हल्की रोशनी में पढ़ते थे, जिसकी चिमनी भी टूटी हुई होती थी। लेकिन मेरे अंदर कहीं एक आग जरूर थी, कुछ अलग करने की चाह। मन में यही ख्याल आता था कि जिंदगी में कुछ ऐसा करना है, जिससे अपने परिवार का जीवन बदल सकूं और समाज के लिए भी कुछ कर सकूं। उन्हीं कठिन परिस्थितियों में पले छोटे-छोटे सपने ही मेरी सबसे बड़ी ताकत बने और मुझे इस मुकाम तक लेकर आए।

परिश्रम से पाया मनचाहा मुकाम: मेरा पूरा सफर संघर्ष और मेहनत से भरा रहा है। अपनी लगन और समर्पण के दम पर मैंने नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप हासिल की, जो मेरे लिए एक नई उम्मीद लेकर आई। इसी के सहारे मैं अमृतसर मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए पहुंचा। वहां भी दिन-रात मेहनत करता रहा और हर चुनौती को एक अवसर की तरह लिया। वर्ष 1975 में अपनी क्लास में टॉप किया। डॉक्टर बनने के बाद मैंने इसे केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम माना। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका गया, जहां कार्डियोलॉजी में उच्च प्रशिक्षण लिया। वहां के प्रतिष्ठित संस्थानों में काम करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा, खुद को निखारा।

जन सेवा के लिए देश लौट आया: अमेरिका में मुझे बहुत कुछ मिला, बेहतर सुविधाएं, सम्मान और सीखने के अनगिनत अवसर। लेकिन दिल के किसी कोने में हमेशा एक खालीपन था। जब मैं भारत आता और यहां के मरीजों की हालत देखता, खासकर वे लोग जो पैसों की कमी के कारण इलाज नहीं करा पाते, तो मन बहुत व्यथित हो जाता था। मुझे लगता था कि मेरी असली जरूरत यहां है, अपने देश में है। इसलिए एक दिन मैंने तय किया कि अब वापस अपने देश लौटना है।

मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत: मेरी सोच हमेशा से बहुत मानवीय रही है। तभी मैंने ठान लिया कि एक ऐसा अस्पताल बनाऊंगा, जहां इलाज की गुणवत्ता विश्वस्तरीय हो, लेकिन वह आम आदमी की पहुंच से बाहर न हो। मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत इसी सोच और भावना के साथ हुई, सेवा, संवेदना और सुलभ इलाज के उद्देश्य से।

इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी में योगदान: मैंने हमेशा कोशिश की कि मरीज को कम से कम तकलीफ हो और इलाज ज्यादा सुरक्षित और प्रभावी हो। अगर बिना बड़ी सर्जरी के किसी की जान बचाई जा सके, तो इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है। जब मैं देखता हूं कि जिन तकनीकों को हमने अपनाया और आगे बढ़ाया, वे आज हजारों लोगों की जिंदगी आसान बना रही हैं, तो दिल को सुकून मिलता है।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान: पद्म भूषण, पद्म विभूषण जैसे सम्मान मिलना निश्चित रूप से गर्व की बात है। लेकिन अगर दिल से कहूं, तो मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है। जब कोई मरीज स्वस्थ होकर अपने परिवार के पास लौटता है और आंखों में खुशी के आंसू लेकर धन्यवाद देता है, तो वह किसी भी पुरस्कार से कहीं ज्यादा अनमोल होता है।

युवा डॉक्टरों को संदेश: मैं युवाओं से यही कहना चाहूंगा कि डॉक्टर बनना सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मरीज आपके पास उम्मीद और विश्वास लेकर आता है। इसलिए हमेशा सीखते रहें, खुद को अपडेट रखें और ईमानदारी से काम करें। सबसे जरूरी बात, अपने अंदर इंसानियत और संवेदनशीलता को जिंदा रखें। तकनीक और ज्ञान आपको एक अच्छा डॉक्टर बना सकते हैं, लेकिन आपकी संवेदना ही आपको महान डॉक्टर बनाती है।

सफलता के मायने: मेरे लिए सफलता का मतलब सिर्फ नाम, प्रसिद्धि या पुरस्कार नहीं है। असली सफलता तब होती है, जब आप किसी की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला सकें। यही सच्ची सफलता है, जो दिल को संतोष देती है। *

प्रस्तुति: हरिभूमि फीचर्स

दुनिया भर में प्रचलित अलग-अलग नृत्य कलाओं के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भारत की सांस्कृतिक विविधिता को प्रदर्शित करते विभिन्न प्रदेशों के प्रमुख लोकनृत्यों के बारे में जानिए।

सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य

महाराष्ट्र का लोकनृत्य-लावणी

असम का लोकनृत्य-बिहू

हिमाचल प्रदेश का लोकनृत्य-नाटी

परंपरा
शिखर चंद जैन

भारत विविधताओं का देश है। यहां की यह विविधता सिर्फ भाषा, खान-पान या रहन-सहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यहां के लोक नृत्यों में भी रची-बसी है। लोक नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आम जनमानस के उल्लास, उनकी धार्मिक आस्था और ऋतुओं के चक्र का जीवंत उत्सव भी होते हैं।

बिहू (असम): असमिया नववर्ष (रंगाली बिहू) के अवसर पर किया जाने वाला यह नृत्य अपनी तेज गति और हाथों के संचालन के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य हाथों के फुर्तीले संचालन और पारंपरिक 'मेखला चादर' वेशभूषा के लिए भी जाना जाता है। यह नृत्य नई फसल तैयार होने की खुशी और प्रकृति के प्रति आभार ज्ञापन करने का प्रतीक भी होता है।

नाटी (हिमाचल प्रदेश): हिमाचल का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य 'नाटी' कुल्लू और शिमला क्षेत्रों में बड़े उत्सवों के दौरान सामूहिक रूप से किया जाता है। सैकड़ों लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर लंबी श्रंखला बनाते हैं और स्थानीय वाद्ययंत्रों की धुन पर कदम से कदम मिलाकर झूमते हैं। इसने 'सबसे बड़े लोक नृत्य' के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज कराया है।

भांगड़ा (पंजाब): पंजाब की मिट्टी की खुशबू और किसानों के उल्लास का प्रतीक है भांगड़ा लोकनृत्य। मुख्य रूप से बैसाखी के पर्व और फसल कटाई के समय किया जाने वाला यह नृत्य अपनी ऊर्जा के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। ढोल की थाप पर रंगीन पगड़ी और लुंगी पहने गबरू जब 'बल्ले-बल्ले' कहते हुए थिरकते हैं, तो दर्शकों के पैर भी अपने आप थिरकने लगते हैं।

पंजाब का लोकनृत्य-भांगड़ा

रासलीला (उत्तर प्रदेश): ब्रज क्षेत्र का यह प्रसिद्ध नृत्य भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम और उनकी लीलाओं पर आधारित है। ब्रज की धरती मथुरा-वृंदावन से उपजी 'रासलीला' भगवान श्री कृष्ण और गोपियों के दिव्य प्रेम की कहानी है। इसमें नर्तक अपनी भाव-भंगिमाओं से कृष्ण की बाल लीलाओं और रास को प्रदर्शित करते हैं, जो दर्शकों को सीधे भक्ति की दुनिया में ले जाता है।

घूमर (राजस्थान): राजपूताना आन-बान और शान का प्रतीक 'घूमर' को 'राजस्थान की आत्मा' कहा जाता है। अपनी शालीनता और भव्यता के लिए जाना जाने वाला यह नृत्य, भील जनजाति से आरंभ हुआ और बाद में राजपूताना घरानों की पहचान बना। इसमें महिलाएं बड़े घेरे वाले घाघरा पहनकर गोल-गोल घूमती हैं, जिससे एक सुंदर घेरा बनता है। इसकी धीमी लय और हाथ के सधे हुए संचालन इसे बेहद आकर्षक बनाते हैं।

लावणी (महाराष्ट्र): महाराष्ट्र की कला परंपरा का गौरव 'लावणी' पारंपरिक नृत्य है, जो अपनी लयबद्ध ताल और ढोलकी की थाप के साथ किया जाता है। इसमें महिलाएं नौवारी साड़ी पहनती हैं। नौवारी 9 गज की साड़ी होती है। इस नृत्य के दौरान गाए जाने वाले गीत अकसर समाज, राजनीति और प्रेम पर आधारित होते हैं।

कर्नाटक का लोकनृत्य-यक्षगान

यक्षगान (कर्नाटक): दक्षिण भारत का 'यक्षगान' एक प्राचीन और जटिल नृत्य कला है। यह केवल नृत्य नहीं, बल्कि एक संपूर्ण नाटक है, जिसमें भारी वेशभूषा, चेहरे पर चटकीला श्रंगार और संवादों का प्रयोग होता है। इसकी कहानियां मुख्य रूप से हिंदू महाकाव्यों पर आधारित होती हैं, जो रात भर खुले मैदानों में प्रदर्शित की जाती हैं। *

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल भारतीय नृत्य

भारत की कुछ लोकप्रिय नृत्य शैलियों को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल किया गया है। ये हैं-

गरबा (गुजरात): नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा की प्रतिमा या 'दीप गर्भ' के चारों ओर गोल घेरा बनाकर किया जाने वाला यह नृत्य शक्ति की उपासना का एक माध्यम एवं एकता का प्रतीक है। 'गरबा' के दौरान रंग-बिरंगी चनिया-चोली और कुर्तों में सजे लोग तालियों की लय पर जिस तरह समन्वय बिठाते हैं, वह अद्भुत होता है।

छऊ (झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल): यह एक अर्ध-शास्त्रीय मुखौटा नृत्य है, जिसमें मार्शल आर्ट, कलाबाजियां और लोक परंपराओं का मिश्रण होता है। इसमें रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं को नृत्य के माध्यम से जीवंत किया जाता है।

कालबेलिया (राजस्थान): राजस्थान के कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य अपनी लचीली मुद्राओं के लिए जाना जाता है। काली रंग की कढ़ाई वाली पोशाक पहने महिलाएं बीन और ढफ की धुन पर नागिन की तरह लहराते हुए नृत्य करती हैं। इसकी गति इतनी तेज होती है कि देखने वाले अपनी पलकें झपकाना भूल जाते हैं।

बड़ा पर्दा
हेमंत पाल

दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहीं बिना इंटरवल वाली ये फिल्में

वैसे तो दो-ढाई घंटे की फिल्म के बीच में कुछ मिनटों का ब्रेक यानी इंटरवल जरूर होता है। लेकिन बॉलीवुड में कुछ ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें कोई इंटरवल ही नहीं था। बिना ब्रेक वाली ऐसी ही कुछ अलग तरह की फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर में कुछ फिल्मकार ऐसे हुए हैं, जो फिल्मों के तयशुदा फॉर्मूले को चुनौती देते हुए नए प्रयोग करते हैं। बिना गाने वाली फिल्में, सीमित किरदारों पर आधारित फिल्म या एक ही रात में घटित होने वाली घटना पर आधारित फिल्म। ऐसे प्रयोग सिनेमा को नई दिशा देते हैं। इन्हीं में से एक खास प्रयोग रहा बिना इंटरवल की फिल्म, जिसमें दर्शकों को बिना रुके पूरी कहानी के साथ बांधकर रखा जाता है। हालांकि फिल्म में इंटरवल इसलिए रखा जाता है कि दर्शक बीच में थोड़ा रिलैक्स हो जाएं और उसकी कहानी को नए सिरे से एंज्वॉय करें। इंटरवल के बहाने फिल्म की कहानी में मोड़ लाने का मौका भी मिलता है। ऐसे में बिना ब्रेक की फिल्म दर्शकों को नए तरीके का अनुभव देती है।

इसलिए किए गए प्रयोग: भारतीय सिनेमा में इंटरवल सिर्फ दर्शकों को रिलैक्स करने का साधन नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक व्यवस्था का भी हिस्सा रहा है। लेकिन कुछ निर्देशकों ने महसूस किया कि खासतौर पर सस्पेंस, थ्रिलर और यथार्थवादी फिल्मों में इंटरवल कहानी की गति को तोड़ देता है। ऐसे में अगर फिल्म की लंबाई सीमित रखी जाए और पटकथा कसावट भरी हो, तो बिना ब्रेक दर्शकों को अधिक प्रभावशाली अनुभव दिया जा सकता है। यही कारण है कि हिंदी फिल्म इतिहास में कुछ चुनिंदा फिल्में ऐसी बनीं, जिनमें इंटरवल नहीं रखा गया। वे फिल्में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहीं।

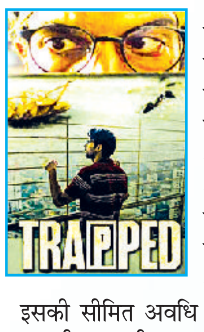

मर्डर मिस्ट्री 'इत्तेफाक': बिना इंटरवल के फिल्म बनाने की दिशा में सबसे चर्चित और शुरुआती प्रयोग 'इत्तेफाक' (1969) के रूप में सामने आया, जिसे यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था। यह फिल्म अपने समय से काफी आगे की सोच का परिणाम थी। इस फिल्म में न तो कोई गीत था और न ही इंटरवल। कहानी एक मर्डर मिस्ट्री पर आधारित थी, जो अंग्रेजी नाटक 'साइनपोस्ट टू मर्डर' से प्रेरित थी। राजेश खन्ना ने इसमें एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जिस पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप होता है और वह पुलिस से बचने के लिए एक घर में शरण लेता है। उस घर की मालकिन, जिसकी भूमिका नंदा ने निभाई, खुद एक रहस्य छुपाए हुए होती है। फिल्म की कहानी इतनी तेज और रोचक ढंग से आगे बढ़ती है कि दर्शकों को इंटरवल की जरूरत महसूस ही नहीं होती। लगभग डेढ़ घंटे की इस फिल्म को कम समय में शूट किया था, लेकिन इसकी कहानी की कसावट और रोमांच ने इसे यादगार बना दिया।

सामाजिक यथार्थ को दर्शाती 'धोबी घाट': फिल्म 'धोबी घाट' का निर्देशन किरण राव ने किया था। इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका में नजर आए, लेकिन यह पूरी तरह से स्टार-ड्रिवन फिल्म नहीं थी। यह मुंबई शहर के अलग-अलग सामाजिक और भावनात्मक स्तरों पर जी रहे चार लोगों की कहानी है। मोनिका डोगरा, प्रतीक बब्बर और कृति मल्होत्रा द्वारा निभाए गए किरदारों के जरिए फिल्म यह दिखाती है कि सपनों के शहर में हर व्यक्ति अपने-अपने संघर्षों और अधूरी इच्छाओं के साथ जी रहा है। फिल्म का स्वर बहुत ही यथार्थवादी और संवेदनशील है। इसकी सीमित अवधि और बिना इंटरवल के प्रस्तुतीकरण की वजह से दर्शक लगातार पात्रों की दुनिया में डूबे रहते हैं।

क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती 'ट्रैप्ड': विक्रमादित्य मोटवानी द्वारा निर्देशित 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव ने एक ऐसे युवक की भूमिका निभाई है, जो मुंबई के एक सुनसान अपार्टमेंट में फंस जाता है। उसके पास न खाना है, न पानी, न बिजली और न बाहर निकलने का कोई आसान रास्ता। पूरी फिल्म उसी के संघर्ष, भय और जीवित रहने की कोशिशों के इर्द-गिर्द घूमती है। बिना इंटरवल के यह कहानी दर्शकों को उसकी स्थिति में बांध देती है और एक तरह का क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती है। 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव के अभिनय और फिल्म के प्रयोगात्मक स्वरूप की काफी सराहना हुई।

ये फिल्में भी नहीं करतीं ब्रेक की डिमांड: बॉलीवुड में कुछ और फिल्में भी हैं, जिनमें इंटरवल का प्रभाव लगभग समाप्त कर दिया गया या जिन्हें बिना ब्रेक के देखने पर ही इसका असर अधिक महसूस होता है। 'ए वेडनेसडे' जैसी फिल्म अपनी तेज रफ्तार और सीमित समय अवधि के कारण बिना इंटरवल के अधिक प्रभावी लगती है। इसी तरह 'कौन' जिसे राम गोपाल वर्मा ने बनाया, भी सीमित किरदारों और एक ही लोकेशन में घटित होने वाली कहानी के कारण बिना ब्रेक ज्यादा असरदार अनुभव देती है।

आज कितना प्रासंगिक है फिल्मों में इंटरवल: आज जब ओटीटी प्लेटफॉर्म का दौर है और दर्शक बिना किसी व्यवधान के फिल्में देखते हैं, तब इंटरवल की अवधारणा पहले जितनी अनिवार्य नहीं रह गई। अब कहानी की मांग के अनुसार ही फिल्म की संरचना तय की जाती है। फिर भी सिनेमाघरों में इंटरवल का चलन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। क्योंकि यह फिल्म प्रदर्शन की परंपरा और व्यवसाय से भी जुड़ा हुआ है। बिना इंटरवल की फिल्में यह साबित करती हैं कि अगर कहानी में दम हो और प्रस्तुति में कसावट हो, तो दर्शकों को बिना किसी ब्रेक के भी पूरी तरह बांधकर रखा जा सकता है। यह प्रयोग भले कम किया गया हो, लेकिन जब भी किया गया, उसने सिनेमा को एक नई दृष्टि दी और यह दिखाया कि कहानी कहने के तरीके हमेशा बदल सकते हैं। *